श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता

नक्षत्र माहेश्वरी

लेखक
श्रीभागवतानंद गुरु

व्याख्याकार एवं संपादक
पं० ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य
(लब्धस्वर्णपदक)

आर्यावर्त सनातन वाहिनी 'धर्मराज' के सौजन्य से प्रकाशित

NOTION PRESS

NOTION PRESS
India. Singapore. Malaysia.

ISBN xxx-x-xxxxx-xx-x

First Published – 2020
Second Edition – 2021

श्रीनिग्रहाचार्यविरचिता

नक्षत्र माहेश्वरी

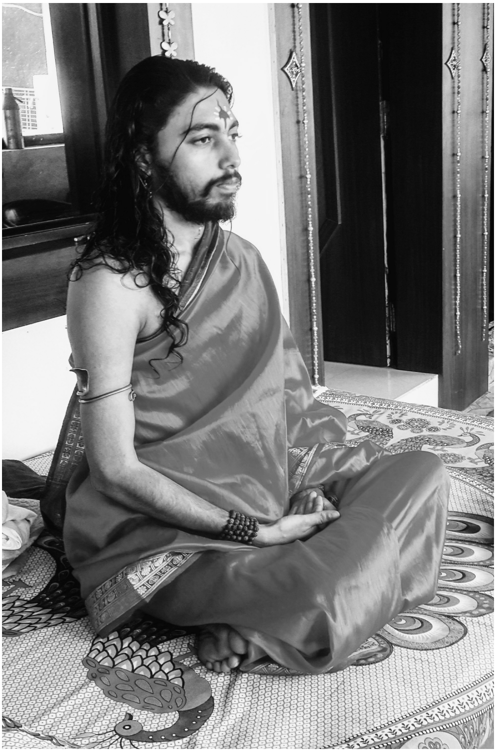
लेखक
श्रीभागवतानंद गुरु

व्याख्याकार एवं संपादक
पं० ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य
(लब्धस्वर्णपदक)

आर्यावर्त सनातन वाहिनी 'धर्मराज' के सौजन्य से प्रकाशित

NOTION PRESS

धर्मसंरक्षणार्थायाधर्मसंहारहेतवे ।
निग्रहाणाञ्च धर्माज्ञा लोके लोके प्रवर्द्धताम् ।।



श्रीनिग्रहाचार्य (श्रीभागवतानंद गुरु)

पुरोवाक्

'नक्षत्र माहेश्वरी' नामक प्रस्तुत ग्रन्थ अपने नाम की समृद्धता को पूरी निष्ठा के साथ सार्थक करता है। यह ग्रन्थ विलुप्तप्राय निग्रह-सम्प्रदाय के अन्तिम आचार्य श्रीनिग्रहाचार्य (श्रीभागवतानंद गुरु) के द्वारा रचित है। धर्मानुरागी वैश्यकुलोत्पन्न मुदित मित्तल जी ने पूर्वकाल में ग्रन्थकार से नक्षत्रों से सम्बन्धित व्रतविचार की जिज्ञासा की थी। यही इस ग्रन्थ की रचना का मुख्य आधार बना और 23 पटलों में नक्षत्र-शान्ति से सम्बन्धित श्लोकबद्ध ग्रन्थ की रचना हुई। ग्रन्थ रचना के पश्चात् आचार्यश्री ने इसकी व्याख्या करने का प्रस्ताव मेरे पास रखा, यह मेरे लिए किसी उत्सव से कम नहीं था।

चूंकि मुझे ज्योतिषी जानकर इस ग्रन्थ की व्याख्या का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था अतः ग्रन्थावलोकन के समय मेरे मन में यह जिज्ञासा हुई कि ग्रन्थरत्न तो बहुत समृद्ध और नक्षत्र-शान्ति विधि का ज्ञान कराने में अप्रतिम है परन्तु शान्ति तो पीड़ित नक्षत्र की करायी जाती है। पाठक को इस बात का ज्ञान कैसे होगा कि उसका कौन सा नक्षत्र पीड़ित है ? इस जिज्ञासा ने इस ग्रन्थ का कलेवर बढ़ा दिया।

योजना बनी कि नक्षत्र-शान्ति से संबंधित 23 पटल वाले श्लोकबद्ध रचना को प्रयोगखण्ड नाम दिया जाए और पीड़ित नक्षत्र के ज्ञान के लिए सूत्रात्मक रूप में व्यवहारखण्ड लिखा जाए। इस योजना के पश्चात् पाठकों के सौकर्य के लिए अनेकानेक फलित ग्रन्थों से प्राप्त मोतियों को सूत्रों में पिरोकर श्रीनिग्रहाचार्य ने बहुत ही लोकोपकारक कार्य किया। उसके बाद

कई दिनों के अथक परिश्रम से मैंने ग्रन्थ-व्याख्या रूप प्राप्त सौभाग्य को पूर्ण किया। सभी ग्रहों की स्थिति किसी न किसी नक्षत्र में रहती है। सभी ग्रहों में चन्द्रमा का प्रभाव सबसे ज्यादा होने के कारण चन्द्रनक्षत्र को ही जन्मनक्षत्र भी कहा जाता है लेकिन यह अनिवार्य नहीं है कि केवल चन्द्र नक्षत्र ही पीड़ित हो।

नक्षत्र माहेश्वरी के व्यवहारखण्ड का विधिवत् अध्ययन करके आप अपने पीड़ित नक्षत्र का ज्ञान कर सकते हैं। तत्पश्चात् प्रयोगखण्ड में वर्णित विधियों से पीड़ित नक्षत्र की शान्ति करके अपने जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि, सौभाग्य, आरोग्य, ऐश्वर्य, संतति आदि कामनाओं की सिद्धि कर सकते हैं। इस ग्रन्थ का नाम नक्षत्र-माहेश्वरी हम दोनों के मातामह (स्व. महेश्वर पाठक) एवं मातामही की पुण्यस्मृति में रखा गया है। इस ग्रन्थ में विराजमान वाग्देवी अपने अध्येताओं का सतत कल्याण करती रहें। इसी प्रार्थना के साथ.....

आपका कल्याणकामी

पं. ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य

भाद्रपद कृष्णजन्माष्टमी

संवत् २०७७, राँची

विषय सूची

--*

॥ अथ व्यवहारखण्डः ॥

ग्रन्थकारकृतमङ्गलाचरणम्

॥ राजते कालजिह्वा ॥

काल की जिह्वा (समय की विनाशिका शक्ति) ही सर्वत्र शोभायमान है।

--*

॥ अथ प्रथमः पटलः ॥

नक्षत्रपरिचयः

1) न क्षरति न गच्छतीति नक्षत्रम्।

2) तत्सापेक्षिका ग्रहगतिः।

3) अनन्तानि।

जिसका क्षरण न हो, जो गतिमान् न हों, जो हमें स्थिर दिखें, उन्हें नक्षत्र कहते हैं । अनन्त आकाश में स्थित नक्षत्रों के सापेक्ष ही हम ग्रहों की गति, क्रान्ति, स्थिति आदि का अध्ययन करते हैं । अनन्त आकाश में नक्षत्रों की संख्या अनन्त है ।

4) क्रान्तिवृत्तस्थान्यष्टाविंशति वैकोनसङ्ख्यकानि।

5) पादाश्चत्वारः।

इस ग्रन्थ में अथवा कहें कि ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्र शब्द का तात्पर्य क्रांतिवृत्तस्थ 27 या 28 नक्षत्रों से होता है । सभी नक्षत्रों में चार-चार चरण होते हैं । इस प्रकार 27 नक्षत्रों में 27 × 4 = 108 चरण होते हैं ।

6) भूपरिधिना व्योममानमावत्सरं दृश्यते।

7) तस्मिन्नुक्तसंख्यकानि नक्षत्राणि।

8) फलितदृष्ट्या पराणि।

अनेक नक्षत्रों में से 27/28 नक्षत्र ही क्यों ? इसी प्रश्न का उत्तर ग्रंथकार श्रीनिग्रहाचार्य जी ने उक्त तीन सूत्रों में दिया है । मान लीजिये, आप एक कुएँ में गिर गए, वहाँ पानी नहीं है किन्तु कुवाँ थोडा गहरा है । अब आप ऊपर की ओर देखिये और कल्पना करके बताइए कि आप आकाश का कितना बड़ा क्षेत्र देख पाएंगे ? आप उस कुवें के अन्दर से आकाश का उतना ही बड़ा क्षेत्र देख पाएंगे जितनी बड़ी उस कुवें की परिधि होगी ।

यह धरती भी एक विशाल कूपतल के समान ही है । इस पर स्थित होकर हम उतना ही बड़ा आकाश देख पाते हैं जितनी बड़ी इसकी परिधि है, यह वर्ष भर में घूमते हुए आकाश के अलग अलग 27 भागों को दिखाती है, अर्थात् पृथ्वी के परिक्रमण मार्ग में इन्हीं 27 नक्षत्रों से हमारा दृष्टिसम्पर्क होता है। पृथ्वी में रहने के कारण हमारे पास आकाश के कुल-मिलाकर 27 ही पृष्ठदृश्य/Backgrounds विद्यमान हैं, इसलिये पृथ्वी से देखने पर अन्य ग्रह भी हमें इनमे से ही किसी पृष्ठदृश्य पर दृष्टिगोचर होंगे । अतः फल विचार के दृष्टिकोण से हम पृथ्वीवासियों के लिए इन्हीं नक्षत्रों का सबसे अधिक महत्त्व है, जो ज्योतिषशास्त्र में स्वीकृत हैं ।

9) भूरक्षनत्याभिजित्स्पर्शाद्विकल्पः।

मुख्यरूप से 27 ही नक्षत्र फल विचार के दृष्टिकोण से स्वीकार्य किए गए हैं, 28 वाँ अभिजित् नक्षत्र हमारे परिक्रमा मार्ग में नहीं आता पर पृथ्वी के अपने अक्ष पर 23.5° झुकी होने के कारण यह किञ्चित् अभिजित् नक्षत्र का स्पर्श मात्र कर लेती है, इसलिए विकल्प से कहीं कहीं फलविचार के क्रम में अभिजित् को भी स्थान दिया गया है ।

10) उत्तराषाढाश्रवणयोः पञ्चदशांशा अभिजितः।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ और श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण के मध्य अभिजीत नक्षत्र की स्थिति रहती है । उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का 15 वाँ भाग (उत्तराषाढ़ा का सम्पूर्ण मान ÷ 15) और श्रवण नक्षत्र की 4 घटी मिलाने पर अभिजित् नक्षत्र का मान प्राप्त होत्ता है । इस तरह औसत रूप में अभिजित् नक्षत्र का मान 19 घटी (7 घंटा 36 मिनट) माना गया है जिसको मिलाने पर नक्षत्रों की संख्या 28 हो जाती है । यहाँ यह ध्यान रहे कि प्रतिदिन दोपहर के समय 48 मिनट के लिए आने वाला अभिजित् मुहूर्त और अभिजित् नक्षत्र दोनों ही अलग अलग हैं, यहाँ संशय नहीं करना चाहिए ।

11) कलानुपातेनर्क्षमानमष्टशतम्।

ग्रंथकार श्रीनिग्रहाचार्य जी इस सूत्र में नक्षत्र का गणितीय स्वरूप बता रहे हैं । पृथ्वी के भ्रमण मार्ग को ज्योतिष शास्त्र में क्रान्तिवृत्त

कहा गया है । पहले ही कह चुके हैं कि 27 नक्षत्र क्रान्तिवृत्त में स्थित हैं । क्रान्तिवृत्त एक गोलाकार पथ है, आप सभी जानते है कि किसी भी वृत्त या गोल का कोणीय मान 360° होता है । अतः

360° ÷ 27 = 13°20’ या 800 कला

∴ 1 नक्षत्र का मान = 13°20’

इसी प्रकार, 13°20’ ÷ 4 = 3°20’

∴ 1 नक्षत्र चरण का मान = 3°20’

चन्द्रमा औसतन एक दिन में एक नक्षत्र का भोग करता है ।

॥ इति प्रथमः पटलः ॥

--*

॥ अथ द्वितीयः पटलः ॥

दशावर्णनम्

1) **विंशोत्तरी गरीयसी।**

2) **नक्षत्राधारिता।**

जातक शास्त्र के सुप्रसिद्ध व सर्वमान्य ग्रन्थ 'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' में महर्षि पराशर ने 70 प्रकार की दशाओं का वर्णन करने के पश्चात् 'कलौ विंशोत्तरी मता', ऐसा कह कर विंशोत्तरी की महत्ता को ही

पुष्ट किया है। पुनश्च, उन्होंने दशाफल भी विंशोत्तरी मत से ही बताया है। यह दशा नक्षत्र पर ही आधारित है।

3) कृत्तिकोत्तराफाल्गुन्युत्तराषाढासु सूर्यः।

कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी एवं उत्तराषाढा नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम सूर्य की दशा आती है ।

4) रोहिणीहस्तश्रवणासु चन्द्रः।

रोहिणी, हस्त एवं श्रवण नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम चन्द्रमा की दशा आती है।

5) मृगशिराचित्राधनिष्ठासु भौमः।

मृगशिरा, चित्रा एवं धनिष्ठा नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम मंगल की दशा आती है।

6) अगोरार्द्रा स्वाती शतभिषा च।

आर्द्रा, स्वाती एवं शतभिषा नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम राहु की दशा आती है।

7) पुनर्वसुविशाखापूर्वाभाद्रपदासु जीवः।

पुनर्वसु, विशाखा एवं पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम गुरु की दशा आती है।

8) पुष्यानुराधोत्तराभाद्रपदासु सौरिः।

पुष्य, अनुराधा एवं उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम शनि की दशा आती है।

9) अश्लेषाज्येष्ठारेवतीषु सौम्यः।

अश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम बुध की दशा आती है।

10) मघामूलाश्विनीषु केतुः।

मघा, मूल एवं अश्विनी नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम केतु की दशा आती है।

11) पूर्वाफाल्गुनीपूर्वाषाढाभरणीषु कविः।

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा एवं भरणी नक्षत्रों में जन्म होने पर जीवन में सर्वप्रथम शुक्र की दशा आती है।

॥ इति द्वितीयः पटलः ॥

--*

॥ अथ तृतीयः पटलः ॥

गण्डान्तवर्णनम्

1) सामान्यगण्डान्ताभुक्तानि दुर्दशानिष्टकारकाणि ।

गण्डान्त के मुख्यतः तीन भेद होते हैं – सामान्य मूल दोष, नक्षत्रगण्डान्त, अभुक्त मूल। ये सभी दुर्दशा एवं अनिष्ट करने वाले होते हैं।

2) अश्विनीश्लेषामघाज्येष्ठामूलरेवतीसंज्ञकानि ।

अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती नक्षत्रों की मूल संज्ञा होती है । इन नक्षत्रों में जन्म होने पर सामान्य मूल दोष तो होता ही है । यहाँ तक मूलसंज्ञक सभी नक्षत्रों के नाम एवं सामान्य दोष का उल्लेख करने के पश्चात् अब ग्रंथकार इन नक्षत्रों की अशुभता को सूक्ष्मता से समझने के लिए प्रत्येक चरणों का जन्मफल कह रहे हैं ।

3) अश्विन्यां पितृकष्टं सुखसम्पतिस्सचिवत्वं भूपतित्वञ्च ।

अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला पितृकष्ट, दूसरे चरण में जन्म लेने वाला सुख सम्पत्ति, तीसरे चरण में जन्म लेने वाला सचिव पद एवं चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला भूस्वामित्व को प्राप्त करता है

। यवन जातक में अश्विनी नक्षत्र के चरण फलों में इससे थोडा भिन्न मत प्रस्तुत किया गया है –

अश्विन्याः प्रथमे पादे जातो भवति तस्करः ।
द्वितीये बाल्यकर्मा च तृतीये सुभगो भवेत् ॥
पादे चतुर्थके भोगी दीर्घायुर्जायते नरः ।

अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला चोर, द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला बाल्यकाल से ही आजीविका के प्रति समर्पित, तृतीय चरण में जन्म लेने वाला सौभाग्यशाली एवं चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला भोगवान् और दीर्घायु होता है।

4) अश्लेषायां राज्याप्तिर्धनक्षयो मातृनाशः पितृनाशश्च ।

अश्लेषा के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला राजसुख, दूसरे चरण में जन्म लेने वाला धननाश, तीसरे चरण में जन्म लेने वाला मातृनाश एवं चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला पितृनाश को प्राप्त करता है। फलित मार्तण्ड में भी उक्त फल ही वर्णित है -

सार्पाद्ये प्रथमे राज्यं द्वितीये तु धनक्षयः ।
तृतीये जननीनाशश्चतुर्थे मरणं पितुः ॥
(फलित मार्तण्ड अ. 4, श्लो.17)

अर्थात् - आश्लेषा के प्रथम चरण में जन्म हो तो राज्य सुख होता है, द्वितीय चरण में धन की हानि, तृतीय चरण में माता की हानि तथा चतुर्थ चरण में जन्म होने से पिता की मृत्यु होती है।

5) मघायां मातृपक्षनाशः पितृनाशस्सुखाप्तिर्विद्ययार्थः।

मघा के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मातृपक्ष का नाश, दूसरे चरण में जन्म लेने वाला पितृनाश, तीसरे चरण में जन्म लेने वाला सुख एवं चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला विद्या के माध्यम से धन को प्राप्त करता है। मघा नक्षत्र का चरण फल फलित मार्तण्ड के अनुसार –

आद्यपादे मघायाः स्यान्मातृपक्षविनाशनम्।
द्वितीये पितृनाशः स्यात्तृतीये सुखसम्पदः॥
चतुर्थे द्रविणं विद्यादिति शङ्करभाषितम्।
(फलित मार्तण्ड अ. 4, श्लो.21)

अर्थात्- मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष की हानि होती है। द्वितीय चरण में पिता का नाश, तृतीय चरण में सुखसंपत्ति की प्राप्ति तथा चतुर्थ चरण में विद्या से धन का लाभ होता है ऐसा शङ्कर ने कहा है।

6) ज्येष्ठायामग्रजहानुजहा पितरौ हन्यादात्मघ्नश्च।

ज्येष्ठा के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला बड़े भाई को प्राणसंकट, दूसरे चरण में जन्म लेने वाला छोटे भाई को प्राणसंकट, तीसरे चरण में जन्म लेने वाला माता-पिता के लिए प्राणसंकट एवं चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला अपने लिए प्राणसंकट की स्थिति उत्पन्न करता है। जातक-पारिजात के मत से ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रत्येक चरण का फल प्रस्तुत है –

ज्येष्ठाद्यपादेऽग्रजमाशु हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कनिष्ठम् ।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति स्वयं चतुर्थे मृतिमेति जातः ॥
(जातक-पारिजात अ. 9, श्लो.50)

अर्थात् - ज्येष्ठा के प्रथम चरण में उत्पन्न बालक ज्येष्ठ भ्राता का शीघ्र नाश करता है । द्वितीय चरण में अपने छोटे भाई का नाश करता है, तृतीय चरण में जन्म हो तो पिता का नाश करता है तथा चतुर्थ चरण में उत्पन्न बालक स्वयं ही मृत्यु को प्राप्त करता है । मतान्तर से तृतीय चरण में उत्पन्न बालक माता को और चतुर्थ पद में उत्पन्न बालक पिता को नष्ट करता है ।

7) मूले पितृनाशो मातृनाशो धनप्राप्तिश्शुभञ्च।

मूल के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला पितृनाश, दूसरे चरण में जन्म लेने वाला मातृनाश, तीसरे चरण में जन्म लेने वाला धन एवं चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला शुभता को प्राप्त करता है।
मुहूर्त चिन्तामणि में भी मूल नक्षत्र के प्रत्येक चरण का फल यही

बताया गया है –

आद्ये पिता नाशमुपैति मूलपादे द्वितीये जननी तृतीये ।
धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शान्त्या सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम् ॥
(मु.चि.- न.प्र. श्लो.55)

अर्थात् - मूल के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता का नाश होता है, द्वितीय चरण में जन्म हो तो माता का नाश होता है, तृतीय चरण में जन्म हो तो धन की हानि होती है तथा चतुर्थ चरण का जन्म शुभ माना गया है । इसी प्रकार अश्लेषा के प्रथम चरण में जन्म हो तो शुभ, द्वितीय चरण में जन्म हो तो धन की हानि, तृतीय चरण में जन्म हो तो माता का नाश और चतुर्थ चरण में जन्म हो तो पिता का नाश होता है । इसकी शास्त्रीय शान्ति करा लेने से सर्वत्र शुभ होता है, अशुभ फल न्यून हो जाते हैं ।

8) पौष्णजो नृपतिरमात्यस्सम्पन्नो बहुकष्टभाक्।

रेवती के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला राजपद, दूसरे चरण में जन्म लेने वाला सचिवपद, तीसरे चरण में जन्म लेने वाला सम्पन्नता एवं चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला बहुत से कष्टों को प्राप्त करता है। फलित मार्तण्ड ग्रन्थ के अनुसार रेवती नक्षत्र का चरण फल प्रस्तुत है -

पौष्णादि नृपतिर्द्वितीये सचिवस्तथा।
तृतीये सुखसम्पन्नश्चतुर्थे बहुकष्टभाक्॥
(फलित मार्तण्ड अ. 4, श्लो.26)

अर्थात् - रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो जातक को नृप के समान वैभव प्राप्त होता है, द्वितीय चरण में जन्म हो तो जातक को मंत्री आदि के पद प्राप्त होते हैं, तृतीय चरण में जन्म हो तो जातक सुखसम्पत्ति से युक्त होता है तथा चतुर्थ चरण में जन्म हो तो जातक अनेक कष्ट प्राप्त करता है । अब अगले सूत्रों में आप नक्षत्रगण्डान्त का विशद वर्णन पढेंगे ।

9) मूलमघाश्विन्यादिमुहूर्तमात्रो गण्डान्तः ।

10) शेषाणामन्ते ।

मूल, मघा एवं अश्विनी के प्रथम मुहूर्त (नक्षत्र प्रारम्भ से ४८ मिनट तक) में गण्डान्त होता है । शेष (अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती) के अंतिम मुहूर्त (नक्षत्र समाप्ति से ४८ मिनट पहले तक) में गण्डान्त होता है। इसके सन्दर्भ में श्रीपतिजी का वचन प्रस्तुत है -

पौष्णाश्विन्योः सार्पपित्रर्क्षयोश्च यत्र मूलज्येष्ठयोरन्तरालम्।
तद्धं गण्डं स्याच्चतुर्नाडिकं हि जन्मयात्रोद्वाहकालेष्व निष्टम्॥

11) तत्र शान्तिरपेक्षिता।

12) सामान्य आनक्षत्रावर्त्तनादनवलोकनम्।

13) गण्डान्तेऽयनपर्यन्तम्।

तीनों प्रकारों के गण्डान्तों में (नक्षत्र चरण फल के शुभ होने पर भी) शान्ति अवश्य ही करानी चाहिये । सामान्य गण्डान्त में पिता अपने सम्बन्धित शिशु को उस नक्षत्र में चन्द्रमा के पुनः आने तक न देखे । चन्द्रमा को पुनः उस नक्षत्र में आने में गतिस्थितिभेद से २७ से २९ दिनों का समय लगता है । समाज में 'सत्ताईसा शान्ति' प्रचलित ही है। नक्षत्रगण्डान्त में ६ महीने तक पिता अपने शिशु को न देखे। इसके बाद मूल-शान्ति कराकर ही प्रथम बार बालक का मुखदर्शन करना चाहिए ।

ऊपर ग्रन्थकार ने छः मूल नक्षत्रों के नाम व फलों का वर्णन किया है । उनमें भी ज्येष्ठा, श्लेषा तथा मूल ये तीन नक्षत्र बहुत क्रूर और बहुत ज्यादा अशुभ फल देने वाले हैं, अतः उनका सूक्ष्मतया पुनर्विचार विधि प्रस्तुत की जा रही है -

14) **ज्येष्ठाश्लेषामूलान्यतिक्रूराणि।**

ज्येष्ठा, अश्लेषा एवं मूल अत्यन्त क्रूर होते हैं । इसीलिए ग्रंथकार इन नक्षत्रों का चरणफल वर्णन करने के बाद भी अति सूक्ष्मता से नक्षत्रों के अनिष्टफल को जानने के लिए इन तीन क्रूर नक्षत्रों का पुनर्विचार कर रहे हैं ।

सर्वप्रथम मूल नक्षत्र का विचार प्रस्तुत है, मूल नक्षत्र का पुनर्विचार ग्रंथकार ने बालक व बालिका के लिए अलग-अलग प्रस्तुत किया है। निम्नलिखित विधि से मूल नक्षत्र का फल जानने के लिए मूल

नक्षत्र के सम्पूर्ण मान को 60 से भाग देना चाहिए और भागफल को सूत्रों में बताए गए भागसंख्या से गुणा कर के जन्मभाग का फल जानना चाहिए। आप बुद्धिपूर्वक निम्नसूत्र का सहारा ले सकते हैं -

मूल नक्षत्र समाप्ति समय – मूल नक्षत्र प्रारम्भ समय = मूल नक्षत्र का सम्पूर्ण मान
मूल नक्षत्र का सम्पूर्ण मान ÷ 60 = मूल षष्ट्यंश

15) मूलाद्यसप्तांशेषु सर्वनाशः ।

मूल नक्षत्र के प्रथम सप्तांश (सातवें अंश तक) में जन्म होने पर सर्वनाश होता है ।
सातवाँ अंश = मूल नक्षत्र प्रारम्भ समय + (मूल षष्ट्यंश × 7)

16) ततोऽष्टांशेषु वंशनाशः ।

उसके बाद के आठ अंशों (अर्थात् 8 अंशों से लेकर 15 अंशों के बीच) में जन्म होने पर वंशनाश होता है । पंद्रहवाँ अंश = सातवाँ अंश + (मूल षष्ट्यंश × 8)

17) दशांशेषु मातृनाशः ।

उसके बाद के दश अंशों (अर्थात् 16 अंशों से लेकर 25 अंशों के

बीच) में जन्म होने पर मातृनाश होता है । पच्चीसवां अंश = पंद्रहवाँ अंश + (मूल षष्ट्यंश × 10)

18) एकादशांशेषु मातुलक्लेशः ।

उसके बाद के 11 अंशों (अर्थात् 26 अंशों से लेकर 36 अंशों के बीच) में जन्म होने पर मातृक्लेश होता है । छत्तीसवाँ अंश = पच्चीसवां अंश + (मूल षष्ट्यंश × 11)

19) द्वादशांशेषु राज्यलाभः ।

उसके बाद के बारह अंशों (अर्थात् 37 अंशों से लेकर 48 अंशों के बीच) में जन्म होने पर राज्यलाभ होता है । अड़तालीसवाँ अंश = छत्तीसवाँ अंश + (मूल षष्ट्यंश × 12)

20) पञ्चांशेष्वमात्यत्वम् ।

उसके बाद के पाँच अंशों (अर्थात् 49 अंशों से लेकर 53 अंशों के बीच) में जन्म होने पर मन्त्रीपद प्राप्त होता है। तिरपनवाँ अंश = अड़तालीसवाँ अंश + (मूल षष्ट्यंश × 5)

21) चतुरंशेषु वसुलाभः ।

उसके बाद के चार अंशों (अर्थात् 54 अंशों से लेकर 57 अंशों के

बीच) में जन्म होने पर धन-सम्पदा का लाभ होता है। सत्तावनवाँ अंश = तिरपनवाँ अंश + (मूल षष्ट्यंश × 4)

22) शेषेषु हीनायुश्च पुरुषाणामिति।

उसके बाद के तीन अंशों (अर्थात् 58 अंशों से लेकर 60 अंशों के बीच) में जन्म होने पर अल्पायु योग होता है । ये सारे सूत्र पुरुष जातकों के लिए वर्णित हैं ।

साठवाँ अंश = सत्तावनवाँ अंश + (मूल षष्ट्यंश × 3)

उदाहरण – 03 जुलाई 2020 को ज्येष्ठा नक्षत्र का अन्त समय 24:06 एवं 4 जुलाई 2020 को मूल नक्षत्र की समाप्ति का समय 23:21 दिया गया है। ज्येष्ठा नक्षत्र का अंत समय ही मूल नक्षत्र का प्रारम्भ समय होगा ।

अतः 24h – 00h 06m = -06m

अब 23h21m + (-06m) = 23h15m (मूल नक्षत्र का सम्पूर्ण मान)

ऊपर बताए गए सूत्र के अनुसार –

23h15m ÷ 60 = 23m15s (मूल षष्ट्यंश)

सातवाँ अंश = 00h06m + (23m15s × 7)

⇨ सातवाँ अंश = 2h48m

अतः यदि 4 जुलाई 2020 को रात्रि 12 बजकर 06 मिनट से 2 बजकर 48 मिनट के बीच जन्म हो तो मूल नक्षत्र के प्रथम सप्तमांश में जन्म जानना चाहिए, उसका

फल ऊपर सर्वनाश बताया गया है।

इसी प्रकार से अन्य अंशों की भी गणना करनी चाहिये। यहाँ तक के सूत्रों में मूल नक्षत्रोत्पन्न पुरुष जातकों का फल कहा गया है । अब आगे मूल नक्षत्रोत्पन्न स्त्रीजातक का फल कहा जा रहा है।

23) मूलाद्यचतुरंशेषु पशुनाशः।

मूल नक्षत्र के प्रथम चार अंशों में जन्म होने पर पशुनाश होता है।
* उक्त विधि से ही सूत्रोत्पत्ति एवं अंशानयन करके फलज्ञान करें।

24) ततः षडंशेषु धननाशः।

उसके बाद के छह अंशों (अर्थात् 5 अंशों से लेकर 10 अंशों के बीच) में जन्म होने पर धननाश होता है।

25) पञ्चांशेषु धनाप्तिः।

उसके बाद के पाँच अंशों (अर्थात् 11 अंशों से लेकर 15 अंशों के बीच) में जन्म होने पर धन-सम्पदा का लाभ होता है।

26) कुटिलता।

उसके बाद के पाँच अंशों (अर्थात् 15 अंशों से लेकर 20 अंशों के बीच) में जन्म लेने वाली कुटिल होती है।

27) दशांशेषु धनागमः ।

उसके बाद के दश अंशों (अर्थात् 21 अंशों से लेकर 30 अंशों के बीच) में जन्म होने पर धन-सम्पदा का लाभ होता है।

28) दयाष्टांशेषु ।

उसके बाद के आठ अंशों (अर्थात् 31 अंशों से लेकर 38 अंशों के बीच) में जन्म लेने वाली दयालु होती है।

29) चतुरंशेषु कामिनी ।

उसके बाद के चार अंशों (अर्थात् 39 अंशों से लेकर 42 अंशों के बीच) में जन्म लेने वाली कामिनी (कामनाओं वाली) होती है।

30) ज्येष्ठमातुलनाशः ।

उसके बाद के चार अंशों (अर्थात् 43 अंशों से लेकर 46 अंशों के बीच) में जन्म होने पर मामा का नाश होता है।

31) ज्येष्ठभातृनाशः ।

उसके बाद के चार अंशों (अर्थात् 47 अंशों से लेकर 50 अंशों के बीच) में जन्म होने पर बड़े भाई का नाश होता है।

32) दशांशेषु वैधव्यं स्त्रीणाम्।

उसके बाद के दश अंशों (अर्थात् 51 अंशों से लेकर 60 अंशों के बीच) में जन्म होने पर वैधव्य होता है। यह फल स्त्रियों के लिए कहे गए हैं। अब अश्लेषा नक्षत्र का फल कह रहे हैं । यह फल पुरुष जातक एवं स्त्रीजातक दोनों में सामान रूप से लागू होता है।

33) अश्लेषाद्यपञ्चांशे राज्यप्राप्तिः।

अश्लेषा नक्षत्र के प्रथम पाँच अंशों में जन्म होने पर पशुनाश होता है।

34) ततः सप्तांशेषु पितृहानिः।

उसके बाद के सात अंशों (अर्थात् 06 अंशों से लेकर 12 अंशों के बीच) में जन्म होने पर पितृहानि होती है।

35) अंशद्वये मातृनाशः।

उसके बाद के दो अंशों (अर्थात् 13 अंशों से लेकर 14 अंशों के बीच) में जन्म होने पर माता का नाश होता है।

36) त्रिषु लम्पटः।

उसके बाद के तीन अंशों (अर्थात् 15 अंशों से लेकर 17 अंशों के

बीच) में जन्म होने पर जातक लम्पट होता है।

37) चतुरंशेषु गुरुभक्तः।

उसके बाद के चार अंशों (अर्थात् 18 अंशों से लेकर 21 अंशों के बीच) में जन्म लेने वाला गुरुभक्त होता है।

38) अष्टांशेषु बली।

उसके बाद के आठ अंशों (अर्थात् 22 अंशों से लेकर 29 अंशों के बीच) में जन्म लेने वाला बलवान् होता है।

39) रुद्रांशेषु स्वात्मघाती।

उसके बाद के ग्यारह अंशों (अर्थात् 30 अंशों से लेकर 40 अंशों के बीच) में जन्म लेने वाला आत्मघाती होता है।

40) षडंशेषु श्रीमान्।

उसके बाद के छः अंशों (अर्थात् 41 अंशों से लेकर 46 अंशों के बीच) में जन्म लेने वाला धनवान होता है।

41) पूर्णांशेषु तपस्वी।

उसके बाद के नौ अंशों (अर्थात् 47 अंशों से लेकर 55 अंशों के

बीच) में जन्म लेने वाला तपस्वी होता है।

42) अक्षांशेषु धननाश इत्युभयोः।

उसके बाद के पाँच अंशों (अर्थात् 56 अंशों से लेकर 60 अंशों के बीच) में जन्म होने पर धननाश होता है। उक्त फल बालक व बालिका दोनों के लिए समान ही हैं। अब ज्येष्ठा नक्षत्र के जन्मभागों के अनुसार फल को जानते हैं, इसके लिए ज्येष्ठा नक्षत्र के सम्पूर्ण मान को 10 से भाग देना चाहिए और भागफल को सूत्रों में बताए गए भागसंख्या से गुणा कर के जन्मभाग के अनुसार फल जानना चाहिए । ये फल भी बालक एवं बालिका दोनों के लिए समान ही हैं । पूर्वोक्त विधि से ही युक्ति-पूर्वक अंशानयन करना चाहिए ।

43) ज्येष्ठाद्यंशे मातृमातृनिधनम्।

ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम भाग में जन्म होने पर नानी का निधन कहा गया है।

44) ततोंऽशद्वये मातृपितृनिधनम्।

ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय भाग में जन्म होने पर नाना का निधन कहा गया है।

45) त्रिषु मातुलनाशः।

ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय भाग में जन्म होने पर मामा का निधन कहा गया है।

46) **वेदांशेषु मातृनाशः।**

ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ भाग में जन्म होने पर माता का नाश कहा गया है।

47) **पञ्चांशेषु स्वनाशः।**

ज्येष्ठा नक्षत्र के पंचम भाग में जन्म होने पर स्वयं का ही नाश कहा गया है।

48) **षडंशेषु गोत्रनाशः।**

ज्येष्ठा नक्षत्र के षष्ठ भाग में जन्म होने पर सगोत्रियों का ही नाश कहा गया है।

49) **नगांशेषु कुलनाशः।**

ज्येष्ठा नक्षत्र के सातवें भाग में जन्म होने पर कुल का ही नाश कहा गया है।

50) **अष्टांशेष्वग्रजनिधनम्।**

ज्येष्ठा नक्षत्र के आठवें भाग में जन्म होने पर बड़े भाई की मृत्यु कही गई है।

51) नवांशेषु श्वसुरनाशः।

ज्येष्ठा नक्षत्र के नवम भाग में जन्म होने पर ससुर का नाश कहा गया है।

52) दिगंशेषु सर्वनाशः स्यादुभयोर्जाते।

ज्येष्ठा नक्षत्र के दशम भाग में जन्म होने पर सर्वनाश कहा गया है। उपर्युक्त फल दोनों (बालक या बालिका) के जन्म के संदर्भ में समान हैं।

53) अश्लेषायां पादोनाब्दादर्शनम्।

अश्लेषा नक्षत्र के दोषयुक्त अंश में जन्म होने पर पिता को बालक का मुख 9 महीने तक नहीं देखना चाहिए।

54) ज्येष्ठायां सपादाब्दादर्शनम्।

ज्येष्ठा नक्षत्र के दोषयुक्त अंश में जन्म होने पर पिता को बालक का मुख 15 महीने तक नहीं देखना चाहिए।

55) मूलेऽष्टवत्सराणि।

मूल नक्षत्र के दोषयुक्त अंश में जन्म होने पर पिता को बालक का मुख 8 वर्षों तक नहीं देखना चाहिए।

56) ज्येष्ठान्तमुहूर्तद्वयोरभुक्तसंज्ञा मूलादिमुहूर्तयोश्च।

ज्येष्ठा के अंतिम दो मुहूर्त (९६ मिनट) तथा मूल के प्रारम्भिक दो मुहूर्तों में अभुक्तमूल होता है।
बहुमतसिद्ध नारदजी के वचनानुसार -
अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं हि नारदः ।
(मु.चि.- न.प्र. श्लो.54)

अर्थात् - नारद जी के मत से ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम 4 घटी (1 घंटा 36 मिनट) एवं मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की 4 घटी (1 घंटा 36 मिनट) कुल-मिलाकर 3 घंटे 12 मिनट का समय अभुक्तमूल कहलाता है । इसको त्रैराशिक से भी समझना चाहिए, इन दोनों का औसत 4 घटी (96 मिनट) का समय सबसे अधिक खराब प्रभाव वाला होता है । अर्थात् जब ज्येष्ठा नक्षत्र के समाप्ति के 1 घंटे 36 मिनट शेष हों तो अभुक्तमूल शुरू होगा, जैसे जैसे दोनों नक्षत्रों की सन्धि निकट आती जाएगी, अशुभता बढती जाएगी, अन्तिम दो घटियों अर्थात 48 मिनट के समय से अशुभत्व अपने चरम की ओर बढ़ रहा होगा, अंतिम एक घटी (24 मिनट) में अशुभत्व अपने चरम पर होगा । इसी प्रकार मूल के प्रथम 24 मिनट में अशुभता अपने चरम पर होगी अगले 24 मिनट चरम से दूर जाती अशुभता और शेष 48 मिनट में अभुक्तमूल की सर्वसामान्य अशुभता रहेगी ।

57) त्यागोऽभुक्ते।

अभुक्त मूल में जन्मे शिशु का त्याग अथवा दान ही श्रेयस्कर है ।

58) क्लिष्टेऽष्टाब्दानवलोकनं पितुर्वा।

त्याग या दान में क्लेश होने पर पिता आठ वर्षों तक शिशु का मुख न देखे, स्वयं से दूर रखकर पालन पोषण कराना समुचित होता है। शास्त्रग्रंथों में अनेकशः यही मत प्राप्त होता है । उदाहरणस्वरूप मुहूर्त-चिन्तामणि का वचन प्रस्तुत है –

जातं शिशुं तत्र परित्यजेद्वा मुखं पितास्याष्टसमा न पश्येत् ।।
(मु.चि.-न.प्र. श्लो.54)

59) अथेतराणि।

अब कुछ अन्य गण्डान्त योगों के बारे में बताते हैं।

60) नक्तस्य भान्ते दिवसस्यर्क्षादौ गण्डान्तश्च।

रात्रि को यदि नक्षत्र की समाप्ति के समय के आसपास अथवा दिन में नक्षत्र के प्रारम्भ के समय के आसपास जन्म हो तो भी गण्डान्त होता है।

61) सन्ध्ययोस्सन्ध्यायां वा।

प्रातः एवं सायं संध्या के समय अथवा दो नक्षत्रों की सन्धिकाल में जन्म हो तो भी गण्डान्त है।

62) चापे पूर्वाषाढासु पितृनाशः।

धनु लग्न हो एवं पूर्वाषाढा नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो पितृनाश होता है।

63) पूर्वाषाढाजः पितृमातृसुतमातुलघ्नः।

पूर्वाषाढा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला पिता के लिए, द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला माता के लिए, तृतीय चरण में जन्म लेने वाला (यथाकाल में) पुत्र के लिए तथा चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति मामा के लिए प्राणभय उत्पन्न करता है।

64) पुष्ये च।

पुष्य नक्षत्र के सन्दर्भ में भी उपर्युक्त फल समझना चाहिए। यहाँ यह ध्यातव्य है कि सूत्र तिरसठ में जो पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के चरण फल बताये गए हैं वो पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने वालों के लिए यथावत् रहेंगे लेकिन सूत्र बासठ में जो पितृनाश फल बताया गया है वो तब होगा जब जातक का जन्म नक्षत्र पुष्य और जन्म लग्न कर्क हो। जातक-पारिजात नामक ग्रन्थ में वैद्यनाथ दीक्षित जी ने इनके अलावा भी कुछ गण्डान्त योग बताये हैं, प्रसंगवश उनका विवरण प्रस्तुत है -

उत्तराफाल्गुनीताराप्रथमे चरणे यदि।
तिष्यनक्षत्रमध्यस्थपादयोरुभयोर्यदि॥
पादे तृतीये चित्रायाः पूर्वार्द्धे यमभस्य च।
तृतीयांशेऽर्कतारायश्चतुर्थांशेऽन्त्यभस्य च।
जातस्तु पितरं हन्ति जाता चेन्मातरन्तथा॥
(जातक-पारिजात अ. 9, श्लो.62-63)

अर्थात् – उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में पुष्य नक्षत्र के द्वितीय व तृतीय चरणों में, चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में, भरणी नक्षत्र के प्रथम व द्वितीय चरणों में, हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में एवं रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पुत्र का जन्म हो तो पिता को तथा कन्या का जन्म हो तो माता को अनिष्ट होता है। अब किस गण्डान्त योग का फल जातक के आयु की किस अवस्था में प्राप्त होगा, उसका निर्णय बताते हैं -

65) अश्विन्यां षोडशाब्दे गण्डान्तफलम्।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म हो तो गण्डान्त का फल आयु के सोलहवें वर्ष में मिलता है।

66) मघास्वष्टमे।

मघा का फल आयु के आठवें वर्ष में मिलता है।

67) मूले तुरीये।

मूल का फल आयु के चौथे वर्ष में मिलता है।

68) अश्लेषायां द्वितीये।

अश्लेषा का फल दूसरे वर्ष में मिलता है।

69) रेवतीषु वत्सरे।

रेवती का फल एक वर्ष में मिलता है।

70) पूर्वाषाढासु पादोने।

पूर्वाषाढा का फल नौ महीनों में मिलता है।

71) पुष्येऽयनार्धे।

पुष्य नक्षत्र का फल तीन महीनों में मिलता है।

72) अभुक्तेऽचिरात्।

अभुक्त मूल का फल जन्म के कुछ समय में ही मिल जाता है।

॥ इति तृतीयः पटलः ॥

--*

॥ अथ चतुर्थः पटलः ॥

नक्षत्रयोगवर्णनम्

अब यहाँ से ग्रन्थकार नक्षत्र सम्बन्धी बहुत ही महत्वपूर्ण योगों के बारे में बता रहे हैं। इन अशुभ नक्षत्र-योगों में जन्म होने पर जीवन में अनेक संकट आते हैं । स्वास्थ्य, आयु, सफलता एवं सुख में अप्रत्याशित कमी देखने को मिलती है। रहस्यात्मक रूप से पूरा जीवन ही दिशाहीन हो जाना या जीवन में अचानक से उठापटक शुरू हो जाना, ये सब फल अशुभ नक्षत्र-योगों के रहने पर होते हैं।

1) अमायामनुराधोत्तरार्धेऽर्केन्दुभ्यां सार्पशीर्षः।

अमावस्या तिथि को यदि सूर्य व चन्द्रमा दोनों अनुराधा नक्षत्र के तृतीय या चतुर्थ चरण में स्थित हों तो सार्पशीर्ष नामक योग बनता है।

2) मघाविशाखार्द्रामूलकृत्तिकारोहिणी-
हस्तेष्वर्काद्वारक्रमाद्यमघण्टः।

इस सूत्र में यमघंट योगों के बारे में बताया गया है । वार और नक्षत्र के संयोजन से यमघंट योग होता है । रविवार को मघा, सोमवार को विशाखा, मंगलवार को आर्द्रा, बुधवार को मूल, गुरुवार को कृत्तिका, शुक्रवार को रोहिणी, शनिवार को हस्त नक्षत्र हो तो उस दिन यमघंट योग जानना चाहिए। महर्षि पराशर ने वृहत्पाराशर होराशास्त्र में 17 अशुभजन्म योगों की चर्चा की है । बृहत्पाराशर होराशास्त्र अध्याय 88, श्लोक 3 में यमघंट योग तथा श्लोक 4 में सार्पशीर्ष योग परिगणित हैं । प्रस्तुत नक्षत्रमाहेश्वरी के नक्षत्राधारित होने से निग्रहाचार्य ने केवल नक्षत्र सम्बन्धी अशुभजन्म योगों की ही चर्चा की है । अब आगे के सूत्रों से आप यह जान पाएंगे कि किसी नक्षत्र को किन स्थितियों में पीड़ित माना जाता है । ग्रंथकार का यह संकलन बहुत महत्वपूर्ण और सराहनीय है ।

3) पापैः क्षीणम्।

जब किसी नक्षत्र में पापग्रहों की उपस्थिति हो जाये, तो उस नक्षत्र का शुभफल क्षीण हो जाता है।

4) वक्रारे ग्रहणे च।

जिस नक्षत्र में मंगल वक्री होना आरम्भ करे वह नक्षत्र क्षीण माना जाता है । जिस नक्षत्र में सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण लगा हो वह नक्षत्र ग्रहण से लेकर आगामी 6 मास तक पीड़ित रहता है ।

5) अपसव्येऽधीशे।

जब चन्द्रमा किसी नक्षत्र की योगतारा के दक्षिण की ओर से गमन करता है तो इसे अपसव्यगमन कहा जाता है । चन्द्रमा जिस नक्षत्र का अपसव्य गमन करे उस नक्षत्र को पीड़ित जानना चाहिए ।

- जब चन्द्रमा का उत्तर शर नक्षत्र के उत्तर शर से कम हो अथवा जब चन्द्रमा का दक्षिण शर नक्षत्र के दक्षिण शर से अधिक हो तो यह अपसव्य गमन कहलाता है।
- जन्मनक्षत्र का शुद्ध होना अति आवश्यक है, इसके पीड़ित रहने पर जीवन संघर्षों से भरा रहता है। कश्यप ऋषि ने स्पष्ट शब्दों में कहा है -

जन्मभे जन्मसमये पापग्रहसमन्विते।
गुणाश्च निर्गुणास्सर्वे शुभयुक्ते गुणा गुणाः॥

अर्थात् - जन्म के समय जन्मनक्षत्र के पापग्रह से युक्त रहने पर गुणकारक फल व योग गुणरहित हो जाते हैं तथा शुभग्रह के युक्त रहने पर गुणकारक फलों की गुणवत्ता और बढ़ जाती है।
अब ग्रन्थकार आगे के सूत्रों में ध्रुवादि संज्ञाओं के आधार पर जन्मफल और जातक की प्रकृति का ज्ञान करा रहे हैं ।

6) दृढात्मालसी क्षमी ध्रुवेषु।

ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक दृढात्मा, आलसी और क्षमावान होता है।

7) चरेषु सर्वभक्षकश्चलः।

चरसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक सर्वभक्षी और चंचल होता है ।

8) हिंसक उग्रेषु।

उग्रसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक उग्र प्रकृति वाला, अर्थात् क्रोधी एवं आक्रामक विचारों का होता है ।

9) लघुभेऽधीरः।

लघुसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक अधीर प्रकृति का होता है, उसके हर कार्य में अधीरता परिलक्षित होती है ।

10) विलासी क्षान्तो मृदुसंज्ञके।

मृदुसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक विलासी प्रकृति का और क्षमाशील होता है।

11) तीक्ष्णर्क्षे दुर्वक्ता कलहप्रियः।

तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मा झगडालू और कठोरभाषी होता है।

12) मिश्रे मिश्रः।

मिश्रसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक मिश्र प्रकृति अर्थात् मिलेजुले स्वभाव वाला होता है । ध्रुवादि संज्ञक नक्षत्रों का ज्ञान आप निम्नलिखित सारणी से प्राप्त कर सकते हैं -

प्रकृति	नक्षत्र	वार
ध्रुव या स्थिर संज्ञक	रोहिणी, तीनों उत्तरा	रविवार
चर या चंचल संज्ञक	पुनर्वसु, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा	सोमवार
उग्र या क्रूर संज्ञक	भरणी, मघा, तीनों पूर्वा	मंगलवार
मिश्र या साधारण संज्ञक	कृतिका, विशाखा	बुधवार
क्षिप्र संज्ञक	अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित्	गुरुवार
मृदु या मैत्र संज्ञक	मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती	शुक्रवार
तीक्ष्ण या दारुण संज्ञक	आद्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा, मूल	शनिवार

प्रसंगवशात् इस सन्दर्भ में शौनक ऋषि का मत भी मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

अवस्थिरा च प्रकृतिः क्षमी चालस्यसंयुतः।
चरे चल स्वभावः स्यात् गदतः सर्वभक्षकः ॥
उग्रे तथोग्रप्रकृतिर्वधबन्धरुचिः सदा।
मिश्रे तु मिश्रप्रकृतिः समता शत्रुमित्रयोः ॥
लघुभे लघुभोगार्थं सर्वदा प्रकृतिर्भवेत्।
मृदुभे च दयायुक्तो गन्धमाल्यप्रियो भवेत् ॥
तीक्ष्णभे कलहो नित्यं दुर्वक्ता तु मलीमसः।

अर्थात् – यदि जातक का जन्म ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में हो तो वह स्थिर प्रकृति वाला, क्षमाशील और आलसी होता है। चरसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक चंचल स्वभाव वाला होता है, वह रोगी होने पर भी पथ्यापथ्य का पालन नहीं कर पाता एवं इच्छानुसार सब कुछ खाता है। उग्र संज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक उग्र स्वभाव वाला, हिंसा एवं बंधन (कैद या अपहरण) आदि में रुचि रखने वाला होता है।

मिश्र नक्षत्रों में जन्मा जातक मिले-जुले स्वभाव का होता है, वह न तो किसी से वैर करता है और न ही गहरी मित्रता रखता है। क्षिप्र संज्ञक (लघुसंज्ञक) नक्षत्रों में जन्मा जातक जल्दबाजी में कार्य करने वाला, अपने वय और शरीराकृति के अनुपात से आधा भोजन करने वाला होता है। मृदु संज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक दयालु तथा चन्दन-पुष्पप्रेमी (शौकीन तथा सम्मान-पसंद) होता है। तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक नित्य कलह करने वाला, कठोरभाषी और मलिन होता है।

13) अधोमुखेषु गुह्यदर्शी।

अधोमुख संज्ञक नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति अन्तर्मन की बातों को जानने वाला, पुरातत्त्व एवं गुप्तविद्याओं के प्रति आकर्षित तथा भूगर्भशास्त्र में रुचि लेने वाला होता है।

* भरणी, कृत्तिका, श्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा और मूल नक्षत्रों की अधोमुख संज्ञा है।

14) उर्ध्वमुखेषूर्ध्वरेता।

उर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्रों में जन्मा जातक सिद्धान्तवादी, उन्नतिपरक महत्वाकांक्षा वाला और आध्यात्मिक होता है।

* रोहिणी, पुष्य, आर्द्रा, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषा नक्षत्रों की उर्ध्वमुख संज्ञा है।

15) स्वार्थी भोगी च तिर्यङ्मुखेषु।

तिर्यक् मुख संज्ञक नक्षत्रों में जन्मे जातक भोगी और स्वार्थी स्वभाव के होते हैं।

* अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा एवं रेवती नक्षत्रों की तिर्यक् मुख संज्ञा है।

16) देवगणे सात्त्विकः।

देवगण संज्ञक नक्षत्रों में जन्मे जातक सात्विक (धार्मिक आचरण में रुचि रखने वाले) स्वभाव के होते हैं।

17) मानवे राजसः।

देवगण संज्ञक नक्षत्रों में जन्मे जातक राजस (इच्छानुसार आचरण में रुचि रखने वाले) स्वभाव के होते हैं।

18) राक्षसे तामसः ।

देवगण संज्ञक नक्षत्रों में जन्मे जातक तामस (धर्मविरुद्ध आचरण में रुचि रखने वाले) स्वभाव के होते हैं।

- नक्षत्रों का गण जानने के लिए परिशिष्ट देखें ।

19) कुलोत्कृष्टः कुलेषु च।

कुलसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मे जातक अपने कुल में श्रेष्ठ होते हैं। तीनों पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा एवं चित्रा नक्षत्र कुलसंज्ञक हैं ।

20) विपरीतोऽकुलेषु।

अकुलसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मे जातक अपने कुल के विरुद्ध आचरण वाले (कुल के मर्यादा की परवाह न करने वाले) होते हैं। स्वाती, भरणी, अश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा तथा रोहिणी नक्षत्रों की अकुल संज्ञा है ।

21) कुलाकुलेषु मध्यमः।

कुलाकुलसंज्ञक नक्षत्रों में जन्मे जातक सामान्य आचरण वाले, मिलेजुले स्वभाव के होते हैं। मूल, आर्द्रा, अभिजित् एवं शतभिषा नक्षत्रों की कुलाकुल संज्ञा है । अब ग्रन्थकार जन्मकर्मादि छः

नक्षत्रविभाग और उनका फल बता रहे हैं – कुलाकुल संज्ञक नक्षत्रों के सन्दर्भ में वशिष्ठ संहिता का वचन प्रस्तुत है -

कुलभेषु च ये जातास्ते मनुजाः भवन्ति कुलमुख्याः ॥
उपकुलभे परविभवान् भोक्तारस्त्वन्यभेषु सामान्याः ॥

अर्थात् - कुल संज्ञक नक्षत्रों में उत्पन्न जातक अपने कुल में प्रधानता प्राप्त करते हैं। अकुल संज्ञक नक्षत्रों में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरे के धन का भोग करने वाला होता है। कुलाकुल नक्षत्रों में जन्म पाने वाले व्यक्ति साधारण कहे गए हैं।

22) **चन्द्रभो जन्मसंज्ञकः।**

चन्द्रनक्षत्र ही जन्मनक्षत्र कहलाता है।

23) **तत्पीडिते बालारिष्टं मनस्तापमसन्तुलञ्च।**

चन्द्रनक्षत्र के पीड़ित रहने पर बालारिष्ट (बचपन में रोग संकट आदि), मानसिक क्लेश तथा जीवन में असंतुलन होता है।

24) **जन्मभाद्दशमं कर्म।**

जन्मनक्षत्र से दसवाँ नक्षत्र कर्मनक्षत्र कहलाता है।

25) **तत्पीडिते वृत्तिहानिः।**

कर्मनक्षत्र के पीड़ित रहने पर आजीविका में बाधा या हानि समझनी चाहिए।

26) **जन्मन एकोनविंशमाधानम्।**

27) **दूषिते प्रवासः।**

जन्मनक्षत्र से उन्नीसवाँ नक्षत्र आधान-नक्षत्र कहलाता है। आधान-नक्षत्र के पीड़ित रहने पर प्रवास होता है। यह नक्षत्र यदि शुभ हो तो जातक जन्मस्थान से दूर जाकर सफल होता है।

28) **त्रयोविंशं वैनाशिकं स्वनामफलदम्।**

जन्मनक्षत्र से तेईसवाँ नक्षत्र वैनाशिक-नक्षत्र कहलाता है। यह अपने नाम के अनुसार ही फल प्रदान करता है, अगर यह नक्षत्र पीड़ित हो तो जीवन में अनकों बार विनाश काल उपस्थित होते हैं, कोई उसका साथ नहीं देता और व्यक्ति नक्षत्र सम्बन्धी रोगों से परेशान रहता है। इस नक्षत्र को जानकर इसमें कभी कोई शुभकार्य नहीं करना चाहिए।

29) **जन्मनोऽष्टादशं सामुदायिकं नेष्टम्।**

जन्मनक्षत्र से अठारहवाँ नक्षत्र सामुदायिक-नक्षत्र कहलाता है, यह नक्षत्र भी अशुभ माना जाता है।

30) षोडशं साङ्घातिकम्।
31) वियोगापमानकारकम्।

जन्मनक्षत्र से सोलहवाँ नक्षत्र सांघातिक-नक्षत्र कहलाता है। सांघातिक-नक्षत्र के पीड़ित रहने पर प्रियजनों से वियोग और अपमान होता है। मघा नक्षत्र का उदाहरण लेकर जन्म-कर्मादि नक्षत्रों का विवरण प्रस्तुत है –

जन्म नक्षत्र – मघा
कर्म नक्षत्र – मूल
आधान नक्षत्र – रेवती
वैनाशिक नक्षत्र – रोहिणी
सामुदायिक नक्षत्र – उत्तरा भाद्रपद
सांघातिक नक्षत्र – शतभिषा

32) जन्मसम्पद्विपत् क्षेमप्रत्यरिसाधकनिधनमित्रातिमित्राणि नवताराणि।

जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, निधन, मित्र और अतिमित्र ये नवताराओं के नाम हैं। जन्मनक्षत्र से प्रारम्भ करके क्रमानुसार उत्तरोत्तर नक्षत्रों की जन्मसम्पदादि संज्ञा होती है। दसवें और उन्नीसवें नक्षत्र से पुनः इसकी पुनरावृत्ति होती है, इस प्रकार सभी संज्ञाओं में तीन-तीन नक्षत्र प्राप्त होते हैं। सम्पत्, क्षेम, साधक, मित्र और अतिमित्र नक्षत्र शुभ माने गए हैं। जन्म, विपत्,

प्रत्यरि और निधन नक्षत्र अशुभ होते हैं । इनका फल नामानुरूप ही जानना चाहिए। आप नवतारा चक्र नाम देकर इन नक्षत्रों को अपनी सुविधा के लिए सारणीबद्ध कर सकते हैं। यहाँ मघा नक्षत्र का उदाहरण लेकर नवतारा चक्र प्रस्तुत किया जा रहा है ।

नवतारा चक्र

जन्म	मघा	मूल	अश्विनी
सम्पत	पू.फा.	पू.षा.	भरणी
विपत्	उ.फा.	उ.षा.	कृत्तिका
क्षेम	हस्त	श्रवण	रोहिणी
प्रत्यरि	चित्रा	धनिष्ठा	मृगशिरा
साधक	स्वाती	शतभिषा	आर्द्रा
निधन	विशाखा	पू.भा.	पुनर्वसु
मित्र	अनुराधा	उ.भा.	पुष्य
अतिमित्र	ज्येष्ठा	रेवती	अश्लेषा

33) **प्रतिपद्मूलयोर्ज्वालामुखी।**

34) **पञ्चम्यां भरणी तथा।**

35) **षष्ठ्यां कृत्तिका।**

36) **नवम्यां रोहिणीः।**

37) **दशम्यामश्लेषा।**

प्रतिपदा और मूल, पञ्चमी और भरणी, षष्ठी और कृत्तिका, नवमी और रोहिणी तथा दशमी और श्लेषा के संयोजन से ज्वालामुखी योग होता है। ज्वालामुखी योग में जन्मे जातक निरंतर असफल होते रहते हैं। वे दुःखी, गम्भीर रोगों से परेशान और उलझे हुए होते हैं।

38) एकर्क्षेऽशुभम् ।

माता-पिता या भाई-बहनों के नक्षत्रों में ही जातक का जन्म होना अशुभ होता है। महर्षि पराशर ने भी इसे अशुभ-जन्मयोगों में परिगणित करते हुवे इसके शान्ति विधान का भी उल्लेख किया है।

39) पञ्चकेऽपि ।

पंचक नक्षत्रों में भी जन्म अशुभ माना गया है । धनिष्ठा के तृतीय चरण से रेवती पर्यन्त पंचक संज्ञा होती है ।

40) पुष्कराभ्यां शुभम् ।

त्रिपुष्कर या द्विपुष्कर योगों में जन्म होना शुभ है । पुष्कर का अर्थ पद या चरण होता है । ऐसे नक्षत्र, जिनके दो चरण एकराशि में और अगले दो चरण अगली राशि में हों, वे द्विपुष्कर कहलाते हैं । साथ ही, जिन नक्षत्रों के तीन चरण एक राशि में तथा शेष एक चरण दूसरी राशि में हों, वे त्रिपुष्कर कहलाते हैं । यह पुष्करसंज्ञक नक्षत्रों का वैज्ञानिक आधार है । तिथि, वार एवं नक्षत्रों के संयोजन से इन्हें द्विपुष्कर या त्रिपुष्कर कहा जाता है । रविवार, मंगलवार या शनिवार को द्वितीया, सप्तमी या द्वादशी तिथि के रहने पर मृगशिरा, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र हो तो द्विपुष्कर योग होता है । यदि उक्त वार-तिथि के संयोजन के साथ कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी,

विशाखा, उत्तराषाढा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र हो तो त्रिपुष्कर योग होता है ।

41) रविर्दोषसङ्घनाशकः।

रवियोग दोषों के समूह का नाश करता है । रवियोग सूर्य नक्षत्र एवं चन्द्र नक्षत्र की परस्पर दूरी पर निर्भर करता है । जन्म समय का चन्द्र नक्षत्र यदि सूर्य नक्षत्र से चौथे, छठे, नवें, दसवें, तेरहवें या बीसवें क्रम में हो तो जातक का जन्म रवियोग में हुआ हा, ऐसा जानना चाहिए । रवियोग अनेक दोषों का शामक होता है । मुहूर्तचिन्तामणिकार ने भी रवियोग को *दोषसङ्घविनाशकाः* कहा है ।

42) सर्वार्थसिद्धौ सर्वसिद्धिः।

सर्वार्थसिद्धि योग में जन्म होने से व्यक्ति की सभी कामनाएँ पूरी होती हैं, वह जो चाहता है उसमें निश्चित ही सफल होता है ।

43) भाग्यवानमृतसिद्धौ।

अमृतसिद्धि योग में जन्मा जातक भाग्यवान् होता है ।

44) विषे पक्षयोर्हानिः।

विष योग अपनी एवं निकटवर्ती पक्ष (मित्र या सम्बन्धियों), दोनों

की हानि कराता है । सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि एवं विष योगों का विवरण आप निम्नलिखित सारणी से प्राप्त कर सकते हैं ।

वार	सर्वार्थसिद्धि योग	अमृतसिद्धि	विषयोग
रविवार	अश्विनी, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, मूल	हस्त	हस्त + पञ्चमी
सोमवार	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, श्रवण	मृगशिरा	मृगशिरा + षष्ठी
मंगलवार	अश्विनी, कृतिका, अनुराधा, श्लेषा, उ.भा.	अश्विनी	अश्विनी + सप्तमी
बुधवार	कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा	अनुराधा	अनुराधा + अष्टमी
गुरुवार	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, रेवती	पुष्य	पुष्य + नवमी
शुक्रवार	अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, रेवती, श्रवण	रेवती	रेवती + दशमी
शनिवार	रोहिणी, स्वाती, श्रवण	रोहिणी	रोहिणी + एकादशी

उदाहरण – यदि रविवार को अश्विनी नक्षत्र हो तो वह सर्वार्थसिद्धि योग कहलायेगा । इसी प्रकार से रविवार को हस्त नक्षत्र के रहने पर अमृतसिद्धि योग बनेगा । किन्तु यदि रविवार के दिन हस्त नक्षत्र होने पर पञ्चमी तिथि भी हो जाए तो वह विष योग का निर्माण करेगा । यहाँ ध्यातव्य है कि तिथि-वार के संयोजन से एक अन्य विष योग भी प्रसिद्ध है, जिसका अलग महत्त्व है, पाठक भ्रमित न हों ।

॥ इति चतुर्थः पटलः ॥

--*

॥ अथ पञ्चमः पटलः ॥

रोगवर्णनम्

1) जन्मे रुजभाङ्गरणाय तुल्याय वा ।

जन्मनक्षत्र तथा उससे दसवां एवं उन्नीसवां नक्षत्र जन्मसंज्ञक होते हैं। इनमें रोगग्रस्त होने से मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट की प्राप्ति होती है।

2) आधाने निधनभे प्रत्यरौ विपत्करे च।

जन्मनक्षत्र से उन्नीसवां नक्षत्र ही आधानसंज्ञक भी है । जन्मनक्षत्र से सातवां, सोलहवां और पच्चीसवां नक्षत्र निधनसंज्ञक है । जन्मनक्षत्र से पांचवां, चौदहवां एवं तेईसवां नक्षत्र प्रत्यरि कहलाता है । जन्मनक्षत्र से तीसरा, बारहवां एवं इक्कीसवां नक्षत्र विपत् नाम वाला होता है । इनमें भी रोगग्रस्त होने से मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट की प्राप्ति होती है ।

3) अश्लेषोत्तराभाद्रपदप्राथमिकजो रुजभाक्।

अश्लेषा एवं उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति रोगों से ग्रस्त होता है ।

4) भरणीमूलयोर्द्वितीयेऽपि।

भरणी एवं मूल नक्षत्रों के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी रोगी होता है ।

5) उत्तराफाल्गुनीश्रवणानां तृतीये।

6) मृगशिरास्वातीनां चतुर्थे च।

उत्तराफाल्गुनी एवं श्रवण नक्षत्रों के तृतीय चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति रोगी होता है और मृगशिरा एवं स्वाती नक्षत्रों के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति रोगी होता है ।

7) जन्मभात्तृतीयेऽर्कः कर्मस्थ इन्दुर्गदकारकः ।

यदि जन्मकुंडली के दशम भाव में चन्द्रमा हो और सूर्य जन्मनक्षत्र से तीसरे नक्षत्र में स्थित हो तो जातक को निश्चित रूप से रोगी बनाता है । यहाँ तक ग्रन्थकार ने जन्मकुण्डली के आधार पर रोगी होने का वर्णन किया है । अब अगले सूत्र से दैनिक चन्द्रनक्षत्र (गोचर) के आधार पर रोगारम्भ का फल वर्णित करेंगे ।

8) कृत्तिकासु नवरात्रपर्यन्तम् ।

9) अश्लेषासु च ।

कृत्तिका या अश्लेषा नक्षत्र में रोगग्रस्त होने पर स्वास्थ्य 9 रात्रि पर्यन्त बाधित रहता है ।

10) रोहिणीषु त्रिरात्रम् ।

रोहिणी नक्षत्र में यदि व्यक्ति अस्वस्थ हो जाए तो 3 रात्रि बाद स्वस्थ होता है ।

11) मृगशीर्षे पञ्चरात्रम् ।

मृगशिरा नक्षत्र में बीमार पड़ने वाला व्यक्ति 5 रात्रि के बाद स्वस्थ होता है ।

12) आर्द्रायां प्राणनाशश्च ।

आर्द्रा नक्षत्र में बीमार हुए व्यक्ति का कदाचित् मरण भी हो सकता है । प्राणसंकट तो होता ही है ।

13) पुनर्वसुनि सप्तरात्रपर्यन्तम् ।

14) पुष्ये च ।

पुनर्वसु या पुष्य नक्षत्र में यदि स्वास्थ्य क्षीण हो जाए तो 7 रात्रियों के बाद स्वास्थ्य लाभ होगा, ऐसा बतलाना चाहिए ।

15) मघासु मासान्तम् ।

मघा नक्षत्र में अस्वस्थ हुआ व्यक्ति एक महीने के बाद स्वस्थ होता है ।

16) पूर्वाफाल्गुन्यामृतुः ।

17) श्रवणे स्वात्याञ्च ।

पूर्वाफाल्गुनी, श्रवण एवं स्वाती नक्षत्रों में बीमार होने का से दो मास का रोगजन्य कष्ट बताया गया है ।

18) उत्तराफाल्गुन्यां सपादवत्सरपर्यन्तम् ।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में अस्वस्थ हुआ व्यक्ति पन्द्रह महीने के बाद स्वस्थ होता है ।

19) हस्तेषु सप्तमासिकम् ।

हस्त नक्षत्र में अस्वस्थ हुआ व्यक्ति सात महीने के बाद स्वस्थ होता है ।

20) चित्रायां पाक्षिकम् ।

21) ज्येष्ठोत्तराभाद्रपदापूर्वाषाढाधनिष्ठासु च ।

चित्रा, ज्येष्ठा, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा एवं धनिष्ठा नक्षत्रों में अस्वस्थ हुआ व्यक्ति पन्द्रह दिनों के बाद स्वस्थ होता है ।

22) विशाखास्वह्नविंशतिः ।

23) उत्तराषाढासु रेवत्याञ्च ।

विशाखा, उत्तराषाढ़ा एवं रेवती नक्षत्रों में बीमार पड़ने वाला व्यक्ति 20 दिनों के बाद स्वस्थ होता है ।

24) दशाह्नोऽनुराधासु ।

25) वारुण्याञ्च ।

अनुराधा एवं शतभिषा नक्षत्रों में रोगग्रस्त होने वाला व्यक्ति 10 दिनों के बाद स्वस्थ होता है ।

26) मूलेऽसाध्यम् ।

27) पूर्वाभाद्रपदे तथा ।

मूल एवं पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों में बीमार पड़ने वाले व्यक्ति का रोग असाध्य हो जाता है ।

28) अहोरात्रमश्विन्याम् ।

अश्विनी नक्षत्र में बीमार पड़ने वाला व्यक्ति एक दिन में ही स्वस्थ हो जाता है । (यहां ध्यान रहे कि उसका जन्म या निधन नक्षत्र अश्विनी न हो)

29) भरण्यां मरणं ध्रुवम् ।

यदि जातक भरणी नक्षत्र में बीमार पड़ जाए तो उसका मरण निश्चित जानना चाहिए ।

30) देवव्रतेन शान्तिः ।

उपर्युक्त सभी दुर्योग एवं दोषों की शान्ति सम्बन्धित नक्षत्रों के स्वामी

देवताओं के व्रत से होती है । इसका वर्णन आगे 'प्रयोग-खण्ड' में मिलेगा ।

नक्षत्रमाहेश्वरीकार का उपर्युक्त रोगविचार प्राचीन कौशिकमत का अनुशीलन करता है किन्तु मुहूर्तचिन्तामणिकार ने इसमें कुछ वैशिष्ट्यवैभिन्य के साथ अपना मत लिखा है । बुद्धिमान् दैवज्ञ को दोनों ही मतों का तथा कुण्डली के अन्य आयु-सम्बन्धी योगों का विचार करके सामंजस्यपूर्वक फलकथन करना चाहिए, इसी उद्देश्य से मुहूर्तचिन्तामणिकार का मत प्रस्तुत कर रहे हैं -

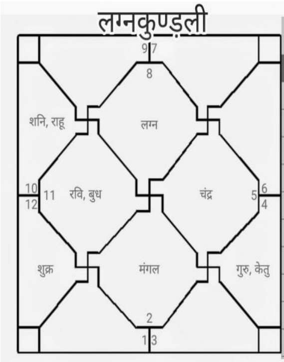
स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभे मृतिर्ज्वरेऽन्त्यमैत्रे स्थिरता भवेद्रुजः ।
याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवा घस्रा हि पक्षो द्व्यधिपार्कवासवे ।।
मूलाग्निदास्रे नव पित्र्यभे नखा बुध्न्यार्यमेज्यादितिधातृभे नगाः ।
मासोऽब्जवैश्वेऽथ यमाहिमूलभे मिश्रेशपित्र्ये फणिदंशने मृतिः ।।
रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु पापवारे ।
रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः ।।
(मुहूर्तचिन्तामणि, नक्षत्रप्रकरण, श्लोक – ४५-४७)

स्वाती, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, आर्द्रा एवं अश्लेषा में जिसे ज्वर हो, उसकी मृत्यु होती है । रेवती एवं अनुराधा में हो तो रोग की स्थिरता बनी रहती है । भरणी, श्रवण, शतभिषा और चित्रा में रोग हो तो ग्यारह दिनों तक, विशाखा, हस्त एवं धनिष्ठा में रोग होने पर पन्द्रह दिनों तक, मूल, कृत्तिका एवं अश्विनी नक्षत्रों में नौ दिनों तक, मघा नक्षत्र में बीस दिनों तक, उत्तरा भाद्रपद, उत्तरा फाल्गुनी, पुष्य,

पुनर्वसु एवं रोहिणी नक्षत्रों में सात दिनों तक, मृगशिरा एवं उत्तराषाढा नक्षत्रों में एक महीने तक ज्वर (रोग) रहता है ।

यदि भरणी, अश्लेषा, मूल, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा अथवा मघा नक्षत्रों में सर्प (उपलक्षणात्मक रूप से सभी विषैले जन्तु) काटे तो मृत्यु होती है । आर्द्रा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, तीनों पूर्वा, विशाखा, धनिष्ठा अथवा कृत्तिका नक्षत्र, पापग्रहों के वार में हों (रविवार, मंगलवार, शनिवार) तथा उस दिन चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, द्वादशी अथवा षष्ठी तिथि हो तो ऐसे योग में रोगग्रस्त होने वाला व्यक्ति शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है ।

नक्षत्र फलादेश हेतु वास्तविक कुण्डली का उदाहरण



ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	वृश्चिक	09:25:17	अनुराधा(2)
सूर्य	कुम्भ	14:57:17	शतभिषा(3)
चन्द्रमा	सिहं	02:23:48	मघा(1)
मंगल	वृष	19:24:54	रोहिणी(3)
बुध(अ)	कुम्भ	12:58:18	शतभिषा(2)
बृहस्पति(व)	कर्क	11:17:17	पुष्य(3)
शुक्र	मीन	12:56:33	उत्तरभाद्र(3)
शनि	मकर	08:34:35	उत्तराषाढ़(4)
राहु(व)	मकर	03:45:21	उत्तराषाढ़(3)
केतू(व)	कर्क	03:45:21	पुष्य(1)

नक्षत्रफल

आपका जन्म मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है । मघा नक्षत्र धनी, समृद्ध घर के मुख्य द्वार के समान आकृति और *पितर देवता*

वाला नक्षत्र है । पश्चिम में इसे मुकुटवत् माना जाता है । वैदिक साहित्य में मघा शब्द का अर्थ *धनवती* ही किया गया है । इसमें यमराज का जन्म समझा जाता है । इन जातकों का अक्सर भरा हुआ शरीर व भारी ठुड्डी होती है, पेट में उभार और गोलाई रहती है । क्रोधी स्वभाव रहने पर भी इनमें सहनशीलता रहती है ।

इनमें अपनी बात को अच्छे तरीके से अभिव्यक्त करने की योग्यता होती है । इनका तेजस्वी व्यक्तित्व, धन संग्रह की आदत, नौकर-चाकरों का सुख, भौतिक सुखों के प्रति आकर्षण एवं परिश्रमी स्वभाव होता है । ये अपने परिवार के नाम को संभालने की कोशिश करते हैं । इनमें माता–पिता के गुण और रूप की गहरी झलक रहती है । सामाजिक स्तर अच्छा रहने से इनके मित्र ही शत्रु रहते हैं । इनको पिता का सुख कम रहता है ।

मघा नक्षत्र में जन्मे जातक भावनाओं में शीघ्र नहीं बहते हैं । इनके पास उत्तम शिक्षा और ज्ञान, अस्थिर मानसिकता वाला जीवनसाथी और वैभवशाली जीवन रहता है । मघा के आरम्भ के अंशों में आपका जन्म होने से उतरते हुए गंडांत का प्रभाव स्वास्थ्य सम्बन्धी विसंगति उत्पन्न करेगा । आपमें आन्तरिक गर्व, बाहरी विनम्रता तथा अग्रगण्य होने की महत्वाकान्क्षा रहेगी ।

मघा नक्षत्र में जन्मे जातक के नाक की नोक पर लालिमा, नेत्रों में गहराई एवं भरी गर्दन होती है । इन्हें धन सम्पति सरलता से प्राप्त होती है तथा पिता की सम्पति या विरासत का सुख रहता है ।

उग्र संज्ञक नक्षत्रफल – मघा नक्षत्र की गिनती उग्र संज्ञक नक्षत्रों में होती है । उग्र संज्ञक नक्षत्रों में जन्म लेने वाले लोग तीखी शैली में बोलने वाले, कटुभाषी, हिंसक एवं आक्रामक होते हैं ।

अधोमुख संज्ञक नक्षत्रफल – मघा नक्षत्र की गिनती अधोमुख संज्ञक नक्षत्रों में होती है । अधोमुख संज्ञक नक्षत्रों में जन्म लेने वाले लोग व्यक्ति, वस्तु या विषय के भीतर घुसकर थाह पाने की ललक वाले, कल्पना से दूर (धरातल की बात करने वाले), ज्योतिष शास्त्र एवं गुप्त विद्याओं में रूचि रखने वाले, शरीर के भीतर की जाँच-परख की योग्यता रखने वाले, भूमिगत निर्माण-खनिज-पुरातत्व-वन्य क्षेत्र आदि से सम्बन्ध रखने वाले और गोताखोरी-तैराकी-जलज वस्तुओं आदि में रुझान रखने वाले होते हैं ।

राक्षसगण संज्ञक नक्षत्रफल – मघा नक्षत्र की गणना राक्षसगण-संज्ञक नक्षत्रों में होती है । राक्षसगण में जन्मे लोगों में तमोगुण की प्रधानता रहती है । उनमें लोभ, झूठ, आलस्य, आदि अवगुण होते हैं । वे नौकरी करना चाहते हैं । अधिक मानसिक कार्य नहीं कर पाते हैं । दूसरों की प्रशंसा करके कार्य कराने में चतुर होते हैं ।

कुल संज्ञक नक्षत्रफल – मघा नक्षत्र की गणना कुलसंज्ञक नक्षत्रों में होती है। कुल संज्ञक नक्षत्रों में जन्म लेने वाले लोग जीवन में बहुधा अपने कुल-परिवार के स्तर से ऊपर जाते हैं। वे अपनी कुल की प्रतिष्ठा, साख और सम्पत्ति को बढ़ाने वाले और अग्रगण्य होते हैं, इनके कारण कुल की पहचान बढती है । इन्हें पैतृक-सम्पदा और परिवार का लाभ मिलता है ।

जन्मकर्मादि नक्षत्रों का फल

जन्म नक्षत्र (मघा) दशम भाव में है, लेकिन दशमेश के पीड़ित होने से नक्षत्र और नक्षत्रपति केतु के नीचाभिलाषी होने एवं गुरुचांडाल योग बनाने से यह नक्षत्र पीड़ित हो रहा है ।

कर्म नक्षत्र (मूल) के नक्षत्रपति भी केतु ही हैं, यह नक्षत्र द्वितीय भाव में विद्यमान है जो रत्न-स्वर्णादि से आजीविका का स्पष्ट संकेत कर रहा है, किन्तु यहां द्वितीयेश के पीड़ित होने से बार बार व्यवधान का सामना करना होगा, परेशानियाँ उठानी होंगी, व्यापार का विस्तार धीमी गति से होगा और एक व्यापक रूप लेने में बहुत लम्बा समय लग जायेगा । नवतारा चक्र में मूल की स्थिति जन्म नक्षत्रों में है, इन सभी कारणों से मूल नक्षत्र आपके लिए शुभ नहीं होगा । हालांकि केतु की दशान्तर्दशा कुछ न कुछ लाभ जरुर कराएगी, उस काल में कार्य का विस्तार भी होगा ।

आधान नक्षत्र (रेवती) ग्रहरहित होने से मध्यम शुभ है । नवतारा चक्र में रेवती नक्षत्र की स्थिति अतिमित्र नक्षत्रों में है, यह भी शुभता का संकेत दे रहा है । इसके शुभ प्रभाव के कारण जातक को जन्मस्थान से सुदूर क्षेत्रों में सफलता प्राप्त होगी, भ्रमण एवं परदेश से धनलाभ होगा । इस तरह रेवती नक्षत्र आपके लिए शुभ है, बुध की दशान्तर्दशा भी अच्छी सिद्ध होगी । यह नक्षत्र पंचम भाव में स्थित है, जहाँ शुक्र उच्चस्थ होकर स्थित है, जो पुत्री सन्तति का स्पष्ट संकेत दे रहा है । पंचमेश के वक्री और पीड़ित होने के कारण सन्तान प्राप्ति विलम्ब से होगी ।

सामुदायिक नक्षत्र (उत्तरा भाद्रपद) में उच्चगत शुक्र होना कुण्डली

के अनिष्ट प्रभावों को कम कर रहा है । नवतारा चक्र में उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र की स्थिति मित्र नक्षत्रों में है, यह भी शुभता का संकेत दे रहा है । इस नक्षत्र के शुभ होने से शनि की दशान्तर्दशा अच्छी होगी । किन्तु यह नक्षत्र पंचम भाव में स्थित है और पंचमेश के वक्री तथा पीड़ित होने के कारण यह नक्षत्र पूर्णतया शुद्ध नहीं माना जायेगा ।

वैनाशिक नक्षत्र (रोहिणी) में पापग्रह (मंगल) के होने से अपने लोगों से विरोध और शरीर कष्ट रहेगा, विवाह बहुत विलम्ब से होगा और वैवाहिक जीवन संघर्षमय होगा । हालाँकि नक्षत्रस्थ भावपति शुक्र के उच्च होने से समस्या अति विकराल रूप नहीं ले पायेगी । नवतारा चक्र में रोहिणी नक्षत्र की स्थिति क्षेम नक्षत्रों में है, यह भी अनिष्ट प्रभाव के कम होने का संकेत दे रहा है ।

सांघातिक नक्षत्र (शतभिषा) में पापग्रह (सूर्य) के होने से मन में अशान्ति और असन्तोष का प्रभाव बना रहेगा तथा निश्चिन्तता का नितान्त अभाव होगा । नवतारा चक्र में शतभिषा नक्षत्र की स्थिति साधक नक्षत्रों में है, यह शुभता का संकेत दे रहा है, राहु की दशान्तर्दशा कुछ न कुछ लाभ अवश्य कराएगी । यह नक्षत्र चतुर्थ भाव में है जहाँ बुधादित्य योग बन रहा है और चतुर्थेश स्वगृही है अतः इसके कुछ शुभ फल भी मिलेंगे, धीमी परन्तु स्थायी प्रतिष्ठा बनेगी ।

॥ इति व्यवहारखण्डः ॥

॥ अथ प्रयोगखण्डः ॥

ग्रन्थकारकृतमङ्गलाचरणम्

ब्रह्मांशं रजनीश्वरं हरिहरात्मानं धरापार्श्वगम्,
आत्रेयं तरुधान्यगुल्मवनिताविप्रेश्वरं खेचरम्।
शुक्लं शम्भुजटालयाश्रिततनुमृक्षाधिपं कामदम्,
आचक्षे च पुनः प्रपूज्य शशिनं नक्षत्रमाहेश्वरीम्॥

ब्रह्मदेव के अंश से उद्भूत, विष्णु (दत्त) एवं शिव (दुर्वासा) से युक्त, पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले, अत्रिपुत्र, वृक्ष, अन्न, वनस्पति, लता एवं ब्राह्मणों के स्वामी, आकाशगामी, शुक्लवर्ण की प्रभा से युक्त, शिव जी की जटाओं में निवास करने वाले, सभी कामनाओं की पूर्ति कंरने वाले नक्षत्रपति चन्द्रमा का पूजन करके मैं नक्षत्रमाहेश्वरी का पुनः उपदेश करता हूँ ।

--*

॥अथ प्रथमः पटलः ॥

नक्षत्रव्रतवर्णनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि नक्षत्राख्यं महाव्रतम् ।
येन तुष्टो जगन्नाथो नक्षत्रपुरुषो हरिः ॥०१॥
चैत्रमासे महाविष्णुं यजेच्चैव सुबुद्धिमान् ।
कालचक्रप्रणेतारं हरिं नक्षत्ररूपिणम् ॥०२॥

अब मैं नक्षत्र महाव्रत का विधान कहता हूँ, जिससे विश्व के स्वामी नक्षत्रपुरुष विष्णु सन्तुष्ट होते हैं। बुद्धिमान् व्यक्ति चैत्रमास में कालचक्र के सञ्चालक नक्षत्ररूपी पापापहारी महाविष्णु की आराधना करें।

पादौ मूलं न्यसेज्जङ्घे रोहिणीष्वर्चयेद्धरिम् ।
जानुनी चाश्विनीयोगे आषाढासूरुदेशकम् ॥०३॥
पूर्वोत्तरासु मेढ्रञ्च कृत्तिकासु कटिं तथा ।
पार्श्वे भाद्रपदाभ्याञ्च रेवतीषूदरं न्यसेत् ॥०४॥

मूल नक्षत्रसमूह को भगवान् के चरण समझकर न्यास करे तथा जंघाओं की रोहिणी नक्षत्रसमूह में पूजा करे। अश्विनी नक्षत्रों को जानुभाग में एवं आषाढ़ा में उरुभाग की कल्पना करे। पूर्वा एवं उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रों में जननांग का न्यास करे तथा कृत्तिका नक्षत्रसमूह की कटिभाग में पूजा करे। दोनों भाद्रपदा नक्षत्रसमूह को पार्श्वभाग में तथा उदर में रेवती का न्यास करे।

अनुराधासु स्तनौ च धनिष्ठाः पृष्ठदेशके ।
यजेद्भुजौ विशाखास्वङ्गुलीषु च पुनर्वसून् ॥०५॥
अश्लेषासु नखान्पूज्य कण्ठं ज्येष्ठासु पूजयेत् ।
श्रवणासु तथा कर्णौ पुष्यं वक्त्रे समर्चयेत् ॥०६॥

स्तनों को अनुराधा नक्षत्र में कल्पित करे तथा धनिष्ठा नक्षत्रसमूह को पृष्ठभाग में स्थान दे। विशाखा में दोनों भुजा एवं पुनर्वसु में उंगलियों की आराधना करे। अश्लेषा में नखभाग का पूजन करके, कण्ठ का ज्येष्ठा नक्षत्रसमूह में पूजन करे। श्रवणा नक्षत्रसमूहों में दोनों कान का पूजन करके पुष्य नक्षत्र का भगवान् के हास्ययुक्त चेहरे में पूजन करे ।

स्वातीस्तु दन्तसङ्घोष्ठ्यां मुखमध्ये च वारुणीम् ।
नक्षत्रपुरुषस्यैव नासिकां वै मघासु च ॥०७॥
न्यसेद्याजकश्रेष्ठश्च चक्षुषी मृगमस्तके ।
भालदेशे तथा चित्रां मस्तकं भरणीषु च ॥०८॥

दन्तभाग में स्वाति नक्षत्रसमूह, मुख में मध्य में शतभिषा एवं नक्षत्रपुरुष की नासिका का मघा नक्षत्रसमूह में ध्यान करे। श्रेष्ठ उपासक नेत्रों का मृगशिरा में, ललाटभाग में चित्रा का एवं मस्तक का न्यास भरणी नक्षत्रसमूह में करे।

केशेषु च न्यसेदार्द्रामेवमृक्षजनार्दनः ।
उपोषितो व्रती भूत्वा स्नानमभ्यङ्गपूर्वकम् ॥०९॥

नक्षत्राधिपतिं नत्वा सोमं सिन्धुसमुद्भवम् ।
वैदिकैर्लौकिकैर्वापि मन्त्रैस्तमर्चयेद्बुधः ॥१०॥
स्वजन्मोडुदिने विप्रान् सम्पूज्य मधु भोजयेत् ।
नक्षत्रविद्भ्यो विप्रेभ्यो दानं दद्याच्च शक्तितः ॥११॥

आर्द्रा का न्यास केशभाग में करे, इस प्रकार से नक्षत्ररूपी नारायण का स्वरूप बनता है। व्रती उपवास करके तेल-उबटन आदि के द्वारा शरीर को निर्मल करके स्नान करे एवं समुद्र से उत्पन्न नक्षत्रों के स्वामी चन्द्रमा को प्रणाम करते हुए उनका (अपनी अधिकार-मर्यादा का विचार करते हुए) वैदिक अथवा लौकिक मन्त्रों से पूजन करे। अपने जन्मनक्षत्र के दिन ब्राह्मणों का विधिवत् सत्कार करके उन्हें मधुर भोजन कराएं। शक्ति के अनुसार नक्षत्रवेत्ता ब्राह्मणों को दान आदि भी दें।

यमौ यमोऽनलो ब्रह्मा सोमो रुद्रस्तथादितिः ।
गुरुः सर्पश्च पितरो भगदेवोऽथ अर्यमा ॥१२॥
रविस्त्वष्टानिलः शक्राग्नी मित्र इन्द्रसंज्ञकः ।
राक्षसश्च जलं विश्वेदेवा ब्रह्मा जनार्दनः ॥१३॥
वसवो वरुणो बस्तपादहिर्बुध्न्यपूषणः ।
ऋक्षाधिपतयश्चैते क्रमाज्ज्ञेया मनीषिभिः ॥१४॥

अश्विनीकुमार, यमराज, अग्नि, ब्रह्मा (रोहिणी नक्षत्र हेतु), चन्द्रमा, रुद्र, अदिति, बृहस्पति, सर्प, पितृगण, भग, अर्यमा, सूर्य, त्वष्टा, वायु,

संयुक्त रूप से इन्द्र एवं अग्नि, मित्र, इन्द्र, राक्षस, जल, विश्वेदेव, ब्रह्मा (अभिजित् नक्षत्र हेतु), विष्णु, वसु, वरुण, अजपाद, अहिर्बुध्न्य एवं पूषा, ये क्रम से नक्षत्रों के अधिपति होते हैं, ऐसा मनीषियों को जानना चाहिए।

ऋक्षस्य यस्य यो देवः स पूज्यस्तद्दिने सदा ।
एवं कृत्वा विधानेनाचरेद्व्रतमनुत्तमम् ॥१५॥
विघ्नसङ्घे समुत्पन्ने सूतकाशौचसम्भवे ।
उपोष्य वाचोपविशेन्नक्षत्रमपरं पुनः ॥१६॥

जिस नक्षत्र का जो देवता है, उसका पूजन उस नक्षत्र के दिन ही करना चाहिए। इस प्रकार से विधानपूर्वक आचरण करते हुए इस उत्तम व्रत को करे। किसी प्रकार का विघ्न आने पर, अथवा सूतकादि से अशुद्धि व्याप्त होने पर उस नक्षत्र के दिन मात्र उपवास एवं मौन धारण करे तथा अगली बार उस नक्षत्र के आगमन पर पूजन करे।

एवं माघे समायाते व्रतोद्यापनमाचरेत् ।
समाप्ते तु व्रते दद्याद्भक्त्या सोपस्करान्वितम् ॥१७॥
नक्षत्रपुरुषं स्वर्णमयं प्रार्थी प्रपूजयेत् ।
सभार्यमार्यविप्रञ्च वस्त्रालङ्कारभूषणैः ॥१८॥
पर्यङ्के प्रतिसंस्थाप्य गन्धमाल्यादिभिस्तथा ।
धान्यं पयस्विनीं धेनुं सवत्सां समलङ्कृताम् ॥१९॥
छत्रोपानहसंयुक्तं घृतपात्रं तथैव च ।

यथा न विष्णुभक्तानां वृजिनं जायते क्वचित् ॥२०॥
तथा सुरूपतारोग्यसुखसम्पदिहास्तु मे ।
यथा न लक्ष्म्या शयनं तव शून्यं जनार्दन ॥२१॥
शय्या ममाप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि ।
एवं निवेद्य तत्सर्वम्प्रणिपत्य क्षमापयेत् ॥२२॥

इस प्रकार से माघ मास के आरम्भ होने पर (अथवा माघ मास के समापन पर ही) व्रत का उद्यापन करे। व्रत के समाप्त होने पर नक्षत्रपुरुष की स्वर्णमयी प्रतिमा बनाकर प्रार्थी साधक उसका पूजन करे एवं जीवनोपयोगी उपकरणों के साथ भक्तिपूर्वक दान करे। श्रेष्ठ ब्राह्मण को सपत्नीक बुलाकर वस्त्र, अलंकार, आभूषण आदि के द्वारा उनका सम्मान करके पलंग पर बैठाकर चन्दन-पुष्पमाला आदि के द्वारा, साथ ही सप्तधान्य, अच्छी प्रकार सुसज्जित दुधारू सवत्सा गौ एवं छाता तथा चरणपादुका के साथ घृतपात्र को सामने रखकर, पुनः निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे -

"जिस प्रकार से विष्णुभक्तों को कभी पापजन्य कष्ट नहीं होता है, उसी प्रकार मुझे भी यहां सुन्दर शरीर, स्वास्थ्य, सुख, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति हो। हे विष्णो ! जिस प्रकार आपकी शय्या कभी लक्ष्मी से शून्य नहीं होती, उसी प्रकार मेरी शय्या भी मेरी पत्नी के सानिध्य से पूर्ण रहे तथा मेरा दाम्पत्य अनेकों जन्मों तक अविच्छिन्न रहे।" ऐसी प्रार्थना करके अपराधों के लिए क्षमाप्रार्थना करते हुए समस्त सामग्रियों को समर्पित करके दान कर दे।

शक्तिहीनश्च गां दद्याद्धृतपात्रसमन्विताम् ।
नक्षत्रपुरुषाख्योऽयं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम् ॥२३॥
गात्राणि चैव भद्राणि शरीरारोग्यमुत्तमम् ।
सन्ततिं मनसः प्रीतिं रूपञ्चातीव शोभनम् ॥२४॥
वाङ्माधुर्यं तथा तेजो यच्चान्यदपि वाञ्छितम् ।
ददाति नक्षत्रपुमान्पूजितश्च जनार्दनः ॥२५॥

अधिक दान करने का सामर्थ्य न हो तो घृतपात्र एवं गौ का दान करे। यह सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला नक्षत्रपुरुष - व्रत है। इसके प्रभाव से शरीर कल्याणप्रद कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ, उत्तम आरोग्य से युक्त हो जाता है। इसके प्रभाव से सन्तान, मानसिक प्रसन्नता, सुन्दर रूप, वाणी में मधुरता, व्यक्तित्व में तेजस्विता अथवा और भी जो कुछ इच्छित वस्तु हो, उसे इस व्रत से पूजित होने वाले नक्षत्रपुरुष जनार्दन प्रदान करते हैं।

॥इति प्रथमः पटलः॥

--*

॥अथ द्वितीयः पटलः ॥

नक्षत्रपुरुषाङ्गार्चनमन्त्राः

पूर्वोक्तस्य महर्क्षस्य पुरुषस्य समर्चने ।
महाविष्णोश्च ये मन्त्राः प्रयोक्तव्याश्च ताञ्छृणु ॥०१॥
ईश्वरेण पुरा प्रोक्तं नारदाय महात्मने ।
विशेषतः कलौ घोरे नक्षत्रव्रतधारिणे ॥०२॥

पूर्व में कहे गए महान् नक्षत्रपुरुष के पूजन में महाविष्णु के जो मन्त्र प्रयुक्त किये जाने चाहिए, उन्हें सुनो। पूर्वकाल में इसे ईश्वर (शिव) ने महात्मा नारद के लिये कहा था। विशेषकर घोर कलियुग में नक्षत्र-व्रत को करने वाले के लिए ये मन्त्र कहे गये हैं।

नमो विश्वधरायेति मूले पादौ सुपूजयेत् ।
गुल्फौ जङ्घे ततः पूज्यौ नमोऽनन्ताय तत्र च ॥०३॥
जानुसम्पूजने विष्णोर्नमस्ते वरदाय च ।
ऊर्वोर्नमः शिवायेति मन्त्रेणाषाढसंज्ञके ॥०४॥

विश्वधराय नमः इस मन्त्र से मूल नक्षत्र में चरणों की पूजा करे। गुल्फ एवं जंघा में *अनन्ताय नमः* मन्त्र से करे। विष्णु के जानुभाग के पूजन में *नमस्ते वरदाय* मन्त्र का प्रयोग करे एवं आषाढा नक्षत्रों में उरुभाग का पूजन *नमः शिवाय* मन्त्र से करे।

नमः पञ्चशरायेति ततो मेढ्रं प्रपूजयेत् ।
यत्र पूर्वोत्तराख्ये स्तः फाल्गुनीसितसङ्कुले ॥०५॥
उक्त्वा नमश्शार्ङ्गधराय मन्त्रं कटिञ्च देवस्य यथोपचारकम् ।
नमोऽस्तु ते केशिनिषूदनाय मन्त्रेण पार्श्वे परिपूजयेत्तथा ॥०६॥

इसके अनन्तर *पञ्चशराय नमः* मन्त्र से गुह्यभाग का पूजन करे जहां फाल्गुनीनक्षत्र समूह में पूर्वा एवं उत्तरासंज्ञक नक्षत्र हैं। *शार्ङ्गधराय नमः* मन्त्र को बोलकर यथायोग्य सामग्रियों के द्वारा देवता के कटिभाग का पूजन करे एवं *नमोऽस्तु ते केशिनिषूदनाय* मन्त्र से पार्श्वभागों का पूजन करे।

कुक्षिद्वयं रेवतीषु नमो दामोदराय च ।
माधवाय नमोऽस्तूक्त्वा पूजयेद्वक्षदेशकम् ॥०७॥
नमो भगवतेऽघौघविध्वंसकर्तृणे ततः ।
नक्षत्रपुरुषं पृष्ठे पूजयेन्नियतश्शुचिः ॥०८॥

रेवती नक्षत्र में दोनों कुक्षियों का पूजन *दामोदराय नमः* एवं वक्षभाग का पूजन *माधवाय नमः* बोलकर करे। इसके बाद पवित्रता से युक्त साधक एकाग्रचित्त होकर *भगवतेऽघौघविध्वंसकर्तृणे नमः* मन्त्र से नक्षत्रपुरुष की पीठ का पूजन करे।

श्रीशङ्खचक्रासिगदाधराय नमोऽस्तु ते मन्त्रमिदं पठित्वा ।
दोर्दण्डपूजाचरणीकृतञ्च नक्षत्रदेवस्य प्रकाशधाम्नः ॥०९॥

सद्व्रती नम उच्चार्य ङेयुक्तं मधुसूदनम् ।
हस्तसम्पूजनैवञ्च नमस्ते कैटभारये ॥१० ॥
नमस्साम्नामधीशाय पठित्वाङ्गुलिपूजनम् ।
नमो मत्स्याय महते नखपूजनमन्त्रकम् ॥११ ॥

प्रकाश से युक्त नक्षत्रदेव की भुजाओं के पूजन का आचार *श्रीशङ्खचक्रासिगदाधराय नमोऽस्तु ते* मन्त्र पढ़कर सम्पादित करे। पवित्र व्रत को करने वाला व्यक्ति *नमो मधुसूदनाय* मन्त्र से तथा *नमस्ते कैटभारये* मन्त्र से हाथ का पूजन करे। *साम्नामधीशाय नमः* ऐसा बोलकर अंगुलियों की पूजा करे एवं *मत्स्याय महते नमः* यह नखपूजन का मन्त्र है।

नमः कूर्माय धीराय मन्दराचलधारिणे ।
कूर्मस्य ध्यानमाश्रित्य कण्ठं ज्येष्ठासु पूजयेत् ॥१२ ॥
वराहाय नमस्तेऽस्तु धरण्युद्धरणाय च ।
एवमुक्त्वा ततः कर्णौ माधवस्य प्रपूजयेत् ॥१३ ॥

कूर्माय धीराय मन्दराचलधारिणे नमः इस मन्त्र से कूर्म के ध्यान का आश्रय लेकर ज्येष्ठा नक्षत्र में कण्ठभाग का पूजन करे।*धरण्युद्धरणाय वराहाय नमस्तेऽस्तु* बोलकर भगवान् लक्ष्मीपति के कानों का पूजन करे।

नमोऽस्तु ते दानवसूदनाय हिरण्यपर्यङ्कविदारणाय ।
उग्राय वीराय नृसिंहनाम्ने मन्त्रेण पुष्ये मुखभागपूजा ॥१४ ॥

उग्राय वीराय नृसिंहनाम्ने हिरण्यपर्यङ्कविदारणाय दानवसूदनाय नमोऽस्तु ते , इस मन्त्र से पुष्य नक्षत्र में मुखभाग की पूजा करे।

नमो नमः कारणवामनाय मन्त्रेण दन्ताग्रमथार्चनीयम् ।
नमोऽस्तु ते भार्गवनन्दनायास्यं पूजनीयं वरुणस्य काले ॥१५॥

नमो नमः कारणवामनाय मन्त्र से दांतों की पूजा करनी चाहिए एवं *नमोऽस्तु ते भार्गवनन्दनाय* मन्त्र से शतभिषा नक्षत्र में मुखमध्य की पूजा करनी चाहिए।

घ्राणेन्द्रिस्यैव विधानपूजा नमोऽस्तु रामाय मनुस्वरूपैः ।
दृग्पूजनञ्चैव नमः पठित्वा विघूर्णिताक्षाय बलाय कुर्यात् ॥१६॥

इसकी नासिका की विधिवत् पूजा *नमोऽस्तु रामाय* मन्त्र से होती है एवं *नमो विघूर्णिताक्षाय बलाय* मन्त्र पढ़कर नेत्रों का पूजन करना चाहिए।

नमो बुद्धाय शान्ताय मनुना भालपूजनम् ।
मुरारये नमस्तेऽस्तूत्तमाङ्गञ्चैव पूजयेत् ॥१७॥

बुद्धाय शान्ताय नमः मन्त्र से ललाट का एवं *मुरारये नमस्तेऽस्तु* मन्त्र से मस्तक का पूजन करे।

विश्वेश्वराय हरये नमस्ते कल्किरूपिणे ।
केशपूजां तथार्द्रासु पूजयेन्मन्त्रविन्नरः ॥१८॥

विश्वेश्वराय कल्किरूपिणे हरये नमस्ते इस मन्त्र से आर्द्रा नक्षत्र में केशों की पूजा करे।

सोपवीती वणिग्वर्मा पुरुषस्य मुखात्मजः ।
मन्त्रपूर्वं वर्तुलञ्च दत्वा पूजनमाचरेत् ॥१९॥
स्त्रियश्शूद्रास्तथा व्रात्या ये चान्ये वर्णसङ्कराः ।
पठेयुस्तारविच्छिन्नं न तेषां श्रुतिमन्त्रणा ॥२०॥

यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य पुरुष उपवीती हों तो मन्त्र से पहले ॐ लगाकर पूजन करें। स्त्री, शूद्र, व्रात्य और जो अन्य वर्णसंकर आदि हैं, वे ॐकार के बिना ही मन्त्र पढ़ें क्योंकि उनके लिए वेदमन्त्रों का विधान नहीं है।

॥इति द्वितीयः पटलः॥

--*

॥अथ तृतीयः पटलः ॥

नक्षत्रजन्मफलम्

नक्षत्रफलमाचक्षे जातकानां हितेच्छया ।
पूर्वाचार्यान्नमस्कृत्य लक्षणञ्च शुभाशुभम् ॥०१॥

अब मैं पूर्वाचार्यों को प्रणाम करते हुए जातकों के हित के लिए नक्षत्रों के शुभाशुभ लक्षण एवं फल का वर्णन करता हूँ।

स्वस्थश्च रूपवान्वित्तसम्पन्नो ज्ञानवाँस्तथा ।
सर्वप्रियो यशस्वी च अश्वयुज्जातको भवेत् ॥०२॥

अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति स्वस्थ, रूपवान्, धनी, ज्ञानवान्, सभी लोगों का प्रिय एवं यशस्वी होता है।

सत्यवादी सुखी स्वार्थी क्रूरो विकलमानसः ।
धनी विद्वाँस्तथा स्वस्थो भरणीभसमुद्भवः ॥०३॥

भरणी नक्षत्रसमूह में जन्म लेने पर जातक सत्य बोलने वाला, सुखी, स्वार्थी, क्रूरकर्मा, चिन्तित मन वाला, धनी, विद्वान् एवं स्वस्थ्य होता है।

आहाराचारकुशलः कामुकस्साहसी तथा ।
तेजस्वी बुद्धियुक्तश्चेज्जायते कृत्तिकासु च ॥०४॥

कृत्तिका में जन्म लेने पर जातक भोजनभट्ट, व्यवहारकुशल,तेजस्वी कामुक, साहसी एवं बुद्धिमान् होता है।

रोहिणीषु क्षीणगात्रः प्रियालापी च निन्दकः ।
सामाजिकस्तथा ज्ञानी भोगी भवति जातकः ॥०५॥

रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने से जातक दुबले शरीर वाला, प्रिय वचन बोलने वाला, निन्दा चुगली करने वाला, सामाजिक व्यवहार में कुशल, ज्ञानी एवं भोगसम्पन्न होता है।

निरुत्साही मृगशिरेऽभिमानी व्याधिपीडितः ।
वाक्पटुः कोमलाङ्गश्च सुवक्ता जायते पुमान् ॥०६॥
धर्मात्मार्द्रासु मूर्खश्च धनहीनोऽथ मन्युमान् ।
स्वस्थो विश्वासहीनश्च सुशीलो जायते नरः ॥०७॥

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति उत्साहहीन, अभिमानी, विविध रोगों से पीड़ित, बात करने में निपुण, कोमल अंगों से युक्त एवं स्पष्ट बोलने वाला होता है। आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने पर जातक धर्मात्मा किन्तु मूर्ख, धनहीन, क्रोधी, अविश्वासी, स्वस्थ और सुशील होता है।

पुनर्वसुनि विख्यातः प्रवासी वसुमान्भवेत् ।
व्यसनी कामसम्पन्नो व्यवहारे च कामतः ॥०८॥

पुनर्वसु नक्षत्र का जातक प्रसिद्ध, प्रवासी, धनी, व्यसनी, कामी एवं स्वेच्छाचारी व्यवहार करने वाला होता है।

देवभक्तस्तथा विद्वान्वसुमान् स्वजनान्वितः ।
पुष्ये कर्तव्यनिष्ठश्च धनी सद्गुणवाहकः ॥०९॥

पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने पर जातक देवताओं का भक्त, विद्वान्, धनवान्, भरे पूरे परिवार वाला, कर्तव्यनिष्ठ, धनी एवं सद्गुणों से युक्त होता है।

अभक्ष्यभोजी सर्पिण्यां बलिष्ठो हास्यलोलुपः ।
मन्दचेता दुराचारी हठी क्रोधी प्रवञ्चकः ॥१०॥

अश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने पर जातक अभक्ष्य वस्तुओं का भोजन करने वाला, बलसम्पन्न, हास परिहास में रुचि रखने वाला, मन्दबुद्धि, दुराचारी, हठ करने वाला, क्रोधी एवं ठग होता है।

मघासूद्यमकर्ता च कुटिलस्साहसी तथा ।
धर्मकामान्वितः श्रीशो गर्वितो देवतानुगः ॥११॥
फाल्गुनीषु प्रसूते च मिष्टभाषी प्रतिष्ठितः ।
सुखी ज्ञानी तथा दानी दूरदर्शी च पण्डितः ॥१२॥
गानविद्यारतो भोगी कदाचिद्योगदेशिकः ।
यशस्वी सत्यवक्ता च जायते नात्र संशयः ॥१३॥

मघा नक्षत्रसमूह में जन्म लेने वाला जातक उद्यमी, कुटिल, साहसी, धार्मिक, कामुक, धनी, अहंकारी एवं आस्तिक होता है। फाल्गुनी-संज्ञक नक्षत्रों में जन्म लेने वाला जातक (पूर्वाफाल्गुनी में) मधुर वचन बोलने वाला, प्रतिष्ठा को प्राप्त करने वाला, सुखी, ज्ञानी, दानी, दूरदर्शी एवं विवेकसम्पन्न होता है। (उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में) संगीत में रुचि रखने वाला, भोगी किन्तु कभी कभी योगमार्ग का अनुगामी भी होता है। साथ ही वह यशस्वी एवं सत्यवादी भी होता है, इसमें संशय नहीं है।

हस्ते चौरस्तथा क्रूरो निर्लज्जश्चाप्यसत्यवाक् ।
शुभयोगान्वितो भूत्वा विद्याबलसमन्वितः ॥१४॥
चित्रासु कृपणो स्वस्थः परदाराभिमर्दकः ।
धनपुत्रान्वितस्सौम्यो भूषणप्रियतां व्रजेत् ॥१५॥
दानी धनी धर्मपरायणश्च
परोपकारी च पदाधिकारी ।
स्वातीषु जातो निजकर्मदक्षो
देवानुरागी द्विजपितृभक्तः ॥१६॥
शत्रुञ्जयी क्रोधपरायणश्चा -
हङ्कारयुक्तो नृपभृत्यकर्मा ।
ईर्ष्यास्तिकत्वं कृपणो विषादी
बालो विशाखाभकलाप्रसूतः ॥१७॥

हस्तसंज्ञक नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक चोर, क्रूर, निर्लज्ज और असत्य बोलने वाला होता है। यदि (जन्मकुण्डली में) शुभ योग से युक्त हो तो विद्वान् एवं पराक्रमी होता है। चित्रा नक्षत्रसमूह में जन्म लेने पर जातक कृपण, स्वस्थ, परस्त्रीगामी, धन एवं पुत्र से युक्त, सौम्य तथा आभूषणों के प्रति आसक्ति को प्राप्त करता है। स्वाती नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक दानी, धनी, धार्मिक, परोपकारी, पदाधिकारी, अपने कार्य में कुशल एवं ब्राह्मण देवता-माता-पिता आदि का भक्त बनता है। विशाखा में जन्म लेने वाला बालक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, क्रोधी, अहंकारी, राजसेवक, ईर्ष्यालु, आस्तिक, कृपण एवं विषादग्रस्त बनता है।

सौन्दर्यमाधुर्यवचो यशस्तथा
विदेशवासं गुरुपितृसेवनम् ।
कर्तव्यनिष्ठां द्रविणं रतिस्मृतिं
तथानुराधा प्रददाति जातकम् ॥१८॥

अनुराधा अपने कालांश में जन्म लेने वाले जातक को सुन्दरता, मधुर वाणी, यश, विदेशवास, गुरु एवं माता-पिता की सेवा का भाव, कर्तव्यनिष्ठा, धन एवं कामुकता प्रदान करती है।

ज्येष्ठासु धनहीनश्च कितवः कटुवाक्पतिः ।
व्यभिचाररतः क्रोधी क्वचिद्धर्मपरायणः ॥१९॥
मूले चातुर्यसम्पन्नो वाक्पटुः पिशुनप्रियः ।

विश्रामार्थी धनी चैवाभिमानी जायते नरः ॥२०॥
आषाढासु प्रसूते ना लम्बो जायाप्रियस्सुखी।
दूरदर्शी तथा शान्तस्स्वकार्यकुशलो धनी ॥२१॥
बलिष्ठो वीर्यसम्पन्नो मित्रयुज्ज्ञानसंयुतः ।
निष्ठां धैर्यं सुखञ्चैव स प्राप्नोति न संशयः ॥२२॥

ज्येष्ठा नक्षत्रसमूह में जन्म लेने वाला जातक धनहीन, पाखण्डी, कठोर वचन बोलने वाला, व्यभिचारी एवं क्रोधी होता है किन्तु कोई कोई धर्मपरायण भी हो जाता है। मूल नक्षत्र में जन्म लेने पर मनुष्य चातुर्य से युक्त, बोलने में कुशल, चुगली निन्दा एवं विश्राम में रुचि रखने वाला, धनी तथा अभिमानी होता है। आषाढासंज्ञक नक्षत्रों में जन्म लेने पर मनुष्य लम्बे शरीर वाला, पत्नी का प्रिय, शान्त स्वभाव, सुखी, दूरदर्शी, अपने कार्य में कुशल, धनी, बलवान्, ओजस्वी, मित्रों से पूर्ण एवं ज्ञानवान् होता है। वह निष्ठा, धैर्य एवं सुख को प्राप्त करता है, इसमें संशय नहीं है।

भवेद्यदा क्वचिद्बालो नक्षत्रे कर्णसंज्ञके ।
धर्मात्मोच्चाधिकारी स्यादुदारश्च कलाप्रियः ॥२३॥
धनिष्ठासु महावीरो धीरो सङ्गीतलोलुपः ।
निर्भयश्च सुखी भूत्वा यशस्वी जायते पुमान् ॥२४॥

यदि श्रवण नक्षत्र में किसी बालक का जन्म हुआ हो तो वह उच्च पदाधिकारी, धर्मात्मा, उदार एवं गीतवाद्यादि ललित कलाओं का

प्रेमी होती है। धनिष्ठा में जन्म लेने पर व्यक्ति पराक्रमी, धैर्यवान्, संगीत का प्रेमी, निर्भय और सुखी होकर यशस्वी होता है।

वरुणस्य शुभर्क्षेषु सञ्जाते भूपतिप्रियः ।
दैवज्ञः पण्डितो योग्यो मितभोगी च सत्यवाक् ॥२५॥

वरुण के शुभ नक्षत्र (शतभिषा) में जन्म लेने पर जातक राजा का प्रिय, ज्यौतिषी, विवेकी, सुयोग्य, भौतिक वस्तुओं का अल्प उपभोग करने वाला एवं सत्यवादी होता है।

सञ्जाते भाद्रपदयोर्यत्फलन्तद्वदाम्यहम् ।
पूर्वायां दुःखसन्त्रस्त उदासः कामुकस्तथा ॥२६॥
कृपणश्च धनी गर्वी नास्तिको धूर्तमानसः ।
उत्तरायां समुत्पन्नस्तार्किको यशसान्वितः ॥२७॥
विद्यां धनं वाक्पटुत्वं लभते भाग्यमद्भुतम् ।
रेवतीसु सुवागीशः साहसी बुद्धिसम्बली ॥२८॥
धनी सन्ततिसम्पन्नः कामुको निर्गदस्तथा ।
नक्षत्रलक्षणज्ञानं ज्योतिश्शास्त्रेषु कीर्तितम् ॥२९॥
सम्यग्विचिन्त्य दैवज्ञो जातकानां शुभाशुभम् ।
ततो वदेद्भविष्यञ्च दैवस्य गहना गतिः ॥३०॥

भाद्रपद नक्षत्रों में जन्म लेने पर जो फल होता है, अब मैं उसे कहता हूँ। पूर्वाभाद्रपद में जन्म लेने पर दुःख से पीड़ित, उदास, कामुक,

कृपण, धनी, अहंकारी, नास्तिक एवं धूर्त होता है। उत्तराभाद्रपद में जन्म लेने पर जातक तार्किक एवं यशस्वी होता है। वह विद्या, धन, वाचालता एवं अद्भुत भाग्य को प्राप्त करता है। रेवती नक्षत्रसमूह में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर वाणी का स्वामी, साहसी एवं बुद्धिबल से कार्य करने वाला होता है। वह धन एवं सन्तान से युक्त, कामी एवं निरोग होता है। इस प्रकार से ज्यौतिषीय शास्त्रग्रन्थों में नक्षत्रों के लक्षण का वर्णन किया गया है। इनके आधार पर जातकों के शुभाशुभ का अच्छी प्रकार विचार करके ही दैवज्ञ को भविष्य का कथन करना चाहिए, क्योंकि दैव की गति बड़ी गहरी है।

॥इति तृतीयः पटलः ॥

--*

॥अथ चतुर्थः पटलः ॥

राशिस्वरूपवर्णनम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि राशीनां प्रभुवर्णनम् ।
भौमः शुक्रो बुधश्चन्द्रो भानुस्तारासुतस्सितः ॥०१॥
कुजो जीवश्च सौरिश्च शनिराङ्गिरसस्तथा ।
मेषादीनां क्रमेणोक्ता ह्येते राशीश्वरा ग्रहाः ॥०२॥

अब मैं राशियों के स्वामियों का वर्णन कर रहा हूँ। मङ्गल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मङ्गल, गुरु, शनि, शनि एवं गुरु, ये क्रम से मेष आदि राशियों के स्वामी ग्रह होते हैं।

मेषश्शृङ्गाकृतिर्मेषो वृषश्च वृषभाननः ।
मिथुनस्याकृतिश्चैव समालिङ्गितदम्पतिः ॥०३॥
कर्कः कर्कसमाख्यातः सिंहः पञ्चास्यपुच्छकः ।
कन्यान्नधारिणी कन्या तुला तोलनधृन्नरः ॥०४॥

मेष राशि की आकृति मेष के सींग के समान है। वृष राशि बैल के मुख के समान है। मिथुन राशि आपस में आलिंगन किये हुए दम्पति के समान दिखाई पड़ती है। कर्क को केकड़े के समान बताया गया है एवं सिंह राशि सिंह की पूँछ के समान है। कन्या राशि अन्न धारण की हुई कन्या के समान एवं तुला राशि तराजू पकड़े हुए पुरुष के समान है।

वृश्चिको वृश्चिकाकारो धनुर्वैचित्र्यसंयुतम्।
अधस्तु तुरगाकारञ्चोर्ध्वभागे धनुर्धरः ॥०५॥

वृश्चिक राशि बिच्छू के आकार की है और धनु राशि कमर से नीचे के भाग में घोड़े के समान एवं ऊपरी भाग में धनुर्धर के समान विचित्रता से युक्त है।

मकरो मकराकारः किन्तु वक्त्रे मृगाकृतिः ।
कुम्भः कुम्भधरश्चैव जलप्रक्षेपकः पुमान् ॥०६॥
मीनौ मीनस्य सङ्केतौ एवं राशिकलेवरम् ।
आकाशे दर्शनीयञ्च देशकालादिभेदतः ॥०७॥

मकर राशि का आकार मगरमच्छ के समान है किन्तु वह मुखभाग में हिरण के समान प्रतीत होती है। कुम्भ राशि की आकृति हाथ में घड़े से जल गिराते हुए पुरुष के समान है। मछलियों का जोड़ा मीन राशि का सूचक है। इस प्रकार से राशियों की आकृति बताई गई जिसे देश एवं काल के भेद से आकाश में देखा जा सकता है।

स्वाहाकान्तस्य तत्त्वेन धनुर्मेषगजारयः।
बलीवर्दः कुमारी च पार्थिवो मकरः स्मृतः ॥०८॥
आकाशतत्त्वयोगेन कुम्भोऽथ मिथुनस्तुला ।
वारितत्त्वेन निर्णीताः कर्कवृश्चिकसंवराः ॥०९॥

मेष, सिंह एवं धनु राशि को अग्नितत्व से युक्त जानना चाहिए। वृष, कन्या एवं मकर राशि पृथ्वीतत्व वाले हैं। आकाशतत्व के सम्बन्ध से मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशियों को जानना चाहिए। कर्क, वृश्चिक एवं मीन जलतत्व वाली राशियां बतायी गयी हैं।

ऋक्षे चैव सपादञ्च मिश्रिता राशिसङ्कुले ।
सिंहाग्रषड्वतिर्भानुर्मकराग्रे निशाकरः ॥१० ॥

सवा दो नक्षत्र के मिश्रण से एक राशि का निर्माण होता है। (एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं, नौ नक्षत्र चरणों की एक राशि होती है) द्वादशराशिचक्र में सिंह से आगे की छः राशियों के स्वामी सूर्य एवं मकर से आगे की राशियों के स्वामी चन्द्रमा होते हैं।

॥इति चतुर्थः पटलः ॥

--*

॥अथ पञ्चमः पटलः ॥

राशियन्त्रविधानम्

सङ्क्षेपेण प्रवक्ष्यामि विधानं नातिविस्तरम् ।
यल्लोके दुर्लभं शास्त्रं राशीष्ट्यन्वितविग्रहम् ॥०१॥

जो राशियों के पूजाविधान से युक्त किन्तु संसार में दुर्लभ शास्त्रों में वर्णित है, उस विधान को मैं विस्तार में नहीं, अपितु संक्षेप में ही बता रहा हूँ।

मेषगोपतियुग्माश्च कर्कटो वायुमन्दिरे ।
सिंहकन्यातुलाद्रोणा भूगृहे परिवेष्टिताः ॥०२॥

मेष, वृष, मिथुन एवं कर्क राशि की पूजा वायुगृह में करे। सिंह, कन्या, तुला एवं वृश्चिक राशियां भूगृह में मण्डित रहती हैं।

चापग्राहौ तथा मत्स्यो राशयो घटसंयुताः ।
तेषां यन्त्रविधानञ्च युग्मपार्थिवसंज्ञकम् ॥०३॥

धनु, मकर एवं मीन राशियां, जो कुम्भ से युक्त होती हैं, उनके यन्त्र विधान को पार्थिवयुग्म कहते हैं।

धनुर्मीनौ तथा कन्यां तत्परं युगदम्पती ।
द्विस्वभावस्थितान् सर्वान् पीतयन्त्रे प्रपूजयेत् ॥०४॥

धनु, मीन, कन्या एवं उसके बाद मिथुन, इन द्विस्वभाव वाले सबों की पीले रंग के यन्त्र में पूजा करे।

तुलानक्रौ तथा मेषं कर्कटं शशिकेतनम् ।
रक्तवर्णान्विते यन्त्रे पूजयेच्चरसंज्ञकान् ॥०५॥

तुला, मकर, मेष एवं चन्द्रमा के गृह कर्क, इन चरसंज्ञकों की पूजा लाल रंग वाले यन्त्र में करे।

द्रोणः कुम्भो वृषः पञ्चाननो सुस्थिरसंज्ञकाः ।
श्वेतवर्णमहायन्त्रे सर्वानेतान्प्रपूजयेत् ॥०६॥

वृश्चिक, कुम्भ, वृष एवं सिंह स्थिरसंज्ञक हैं। इन सबों का श्वेतवर्ण के यन्त्र में पूजन करे।

अथातः सम्प्रवक्ष्याम्यनिलस्य यद्महागृहम् ।
अधो रेखाङ्कनं कृत्वा त्रिकोणन्तेन कल्पयेत् ॥०७॥
ऊर्ध्वकोणत्रिकोणस्यापसव्यज्या हरिप्रिया ।
सव्यरेखापतिर्ब्रह्मा अधो रेखा शिवस्य च ॥०८॥

अब वायु का जो महान् गृह है, मैं उसे कहता हूँ। पहले नीचे रेखा खींचकर उस रेखा को त्रिकोण बना दे। इस त्रिकोण की दाहिनी रेखा विष्णु को प्रिय होती है। बायीं रेखा के अधिपति ब्रह्मा हैं एवं नीचे के रेखा शिव की होती है।

एवं त्रिकोणमारभ्य ततो वृत्तं लिखेद्व्रती ।
एवं वायुगृहं प्रोक्तं त्रिकोणं वृत्तवेष्टितम् ॥०९॥

इस प्रकार से त्रिकोण बनाकर उसके बाद व्रत को करने वाला व्यक्ति त्रिकोण के चारों ओर वृत्त बनाये। इस प्रकार से वृत्त के अन्दर बने त्रिकोण को वायुगृह कहा गया है।

ततो भूगृहमाचक्षे सिंहराश्यग्रपूजने ।
षट्कोणं राशिवर्णेन चतुरस्रेण कीलयेत् ॥१०॥
वर्गान्वितञ्च षट्कोणं सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ।
चापाग्रराशिपूजाया यद्विधानं वदामि तत् ॥११॥

मैं भूगृह को कहता हूँ जो सिंह से आगे की चार राशियों के पूजन में प्रयुक्त है। जिस राशि की पूजा करनी हो उसके रंग के अनुसार षट्कोण बनाकर उसे वर्ग से बांध दे । इस प्रकार वर्ग के अन्दर बना हुआ षट्कोण लोगों को सभी सिद्धियां देता है। धनु से आगे की राशियों के पूजन का जो विधान है, अब उसे मैं कहता हूँ।

पूर्वादिदिक्षु कोणाग्रं कृत्वा वर्गं लिखेत् सुधीः।
वर्गमन्यं पुनस्तत्र विदिक्ष्वश्रिमुखाकृतिम् ॥१२॥
एवं लिखेदष्टकोणं युग्मपार्थिवसंज्ञकम् ।
यद्यद्वर्णञ्च राशीनां यन्त्रे तत्तत्समाश्रयेत् ॥१३॥

बुद्धिमान् व्यक्ति पूर्वादि (दक्षिण, पश्चिम, उत्तर) दिशाओं में कोण वाले वर्ग को लिखे। फिर वहीं पर एक दूसरे वर्ग को लिखे जिसके कोण विदिशाओं (आग्नेय, नैर्ऋत्य, वायव्य एवं ऐशान्य) की ओर हो। इस प्रकार से पार्थिवयुग्म नामक अष्टकोणात्मक यन्त्र को लिखे। जिस राशि का जो रंग है, उसी रंग का यन्त्रनिर्माण में भी आश्रय ले।

राशिं राशीश्वरञ्चैव राशिनक्षत्रस्वामिनम् ।
शिशुमारं हरेः पुत्रं यत्र खेचरसंस्थितिः ॥१४॥
सम्पूज्य विधिना यन्त्रे राशिदोषाद्विमुच्यते ।
खेचराणां प्रभावेण दुर्लभं किं धरातले ॥१५॥

राशि, राशि के स्वामी, उस राशि में जो जो नक्षत्र हैं, उनके स्वामी तथा आकाशीय पिण्डों की जहां स्थिति है उस विष्णुपुत्र शिशुमार चक्र की पूर्वोक्त यन्त्रों में विधिपूर्वक पूजा करके व्यक्ति राशिदोष से मुक्त हो जाता है। ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव से संसार में क्या दुर्लभ है ?

॥इति पञ्चमः पटलः॥

--*

॥अथ षष्ठः पटलः ॥

व्रतानुशासनञ्चाश्विनीनक्षत्रव्रतवर्णनम्

शास्त्रप्रोक्तान्यमानत्र व्रतिनो धर्मवृद्धये ।
मुनिभिरुपदिष्टाँस्तान्सम्प्रवक्ष्यामि सूत्रतः ॥०१॥
व्रतं तपः प्रवक्ष्यन्ते कर्तृसन्तापहेतुना ।
गोनिग्रहेण नियमो कथ्यते मुनिभिः पुरा ॥०२॥

शास्त्र में व्रती के धर्म की वृद्धि लिए जो नियम बताए गए हैं, और जो मुनियों के द्वारा उपदिष्ट हैं, उन्हें मैं यहाँ सूत्ररूप से कहूंगा। व्रत को तप भी कहते हैं क्योंकि वह कर्ता को तपाता है। (उसी ताप से अशुभवृत्तियां भस्म होती हैं) इन्द्रियों का निग्रह करने से पूर्वकाल में मुनियों ने इसे नियम कहा है।

अनलस्त्वग्निहोतृणां श्रेय इत्यभिधीयते ।
व्रतोपवासनियमैर्भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥०३॥
देवोपवसनं कर्म संयमेन पुरस्कृतम् ।
उपावृत्तेषु पापेषूपवासो संविधीयते ॥०४॥

अग्निहोत्रियों के लिए अग्नि ही कल्याणकर्ता बताए गए हैं जो व्रत एवं उपवास के नियमों के कारण सम्पन्नता एवं मुक्ति को प्रदान करते हैं। देवता के निकट रहने का कर्म जब संयम से युक्त हो जाता है एवं जब पापों का शमन होता है तो उसे उपवास कहते हैं।

शाकं मांसं परान्नञ्च मसूरं चणकं तथा ।
मधु वा मैथुनासूये व्रती यत्नेन वर्जयेत् ॥०५॥
उत्तेजकसुमघ्राणं कांस्यपात्रेषु भोजनम् ।
यशःकामी न कुर्वीत काष्ठैर्वा दन्तधावनम् ॥०६॥

शाक, मांस, दूसरे के घर का अन्न, मसूर, चना, मधु, मैथुन एवं ईर्ष्या का भाव, इन सबों को व्रत करने वाला प्रयत्नपूर्वक छोड़ दे। यश की कामना वाला व्यक्ति (व्रत के दिन) कांस्यपात्र में भोजन न करे, उत्तेजक पुष्प एवं गन्ध का सेवन तथा दतुवन से दांत साफ न करे।

गण्डूषं पञ्चगव्यैश्च कृत्वास्यं शुचितां नयेत् ।
बहुलेनाम्बुपानेन ताम्बूलेन व्रतक्षयः ॥०७॥
मैथुनाद्वा दिवास्वप्नाद्व्रतं भवति खण्डितम् ।
धर्मो व्रतेषु सर्वेषु दशधा प्रतिपादितः ॥०८॥

पञ्चगव्य से कुल्ला करके मुखशुद्धि करे (यह क्रिया शूद्रों के लिये वर्जित है)। पान खाने से एवं बारम्बार जल पीने से व्रत क्षीण हो जाता है। मैथुन करने एवं दिन में शयन करने से व्रत खण्डित हो जाता है। सभी लोगों के लिए उपवास में धर्म (धृति, क्षमा, दमादि) दस प्रकार का बताया गया है।

गायत्रीं गुरुमन्त्रं वा स्वाधिकारेण सञ्जपेत् ।
विप्राशनं तथा होमं दानं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥०९॥

अपने अधिकार के अनुसार गायत्री का गुरुमन्त्र का जप करे। ब्राह्मणों को भोजन कराये, प्रयत्नपूर्वक हवन तथा दान करे।

अश्विनीभसमुत्पन्नायाश्विनीव्रतमिष्यते ।
सर्वरोगहरौ देवौ दस्रनासत्यसंज्ञकौ ॥१० ॥

अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले के लिए अश्विनीव्रत कहा गया है। नासत्य एवं दस्र नाम वाले दोनों देवता सभी रोगों का हरण करने वाले हैं।

प्रातःकाले सरित्कूलेऽथवा शङ्करमन्दिरे ।
जन्मर्क्षदिवसे वापि द्वितीयायां नरोत्तमः ॥११ ॥
संज्ञया सहितं सूर्यमश्वरूपसमन्वितम् ।
अश्विनौ यमलौ तत्र पूजयेत् स्थिरमानसः ॥१२ ॥

श्रेष्ठ व्यक्ति प्रातःकाल में नदी के तट पर जाकर अथवा शिवमन्दिर में जन्म नक्षत्र (अश्विनी) के दिन अथवा द्वितीया तिथि को अश्व का रूप धारण किये हुए सूर्यदेव का संज्ञा देवी से युक्त स्वरूप में तथा उनसे उत्पन्न अश्विनीकुमारों का एकाग्र मन से पूजन करे।

रूपं कान्तिरनौपम्यं भिषक्त्वं सर्ववस्तुषु ।
सोमपत्वं च लोकेष्वश्विनौ भवति सर्वदा ॥१३ ॥
सर्वमेतद्द्वितीयायामश्विभ्यां ब्रह्मणा पुरा ।
दत्तं यस्मादतस्ताभ्यां द्वितीयेत्युत्तमा तिथिः ॥१४ ॥

सुन्दर रूप, अनुपम तेजस्विता, सभी तत्वों के रोगहरण का सामर्थ्य, सोमपान का अधिकार ये सब पूर्वकाल में ब्रह्मा जी ने द्वितीया तिथि में अश्विनीकुमारों को दिया था इसीलिए उनके लिए द्वितीया तिथि उत्तम है।

पुष्पाहारी पयोभोजी सत्यवाक्यो दृढव्रतः ।
भूत्वा जपेदश्विनौ यस्स सर्वफलभाग्भवेत् ॥१५॥

जो व्रती (सहजन, कुष्माण्ड आदि के) पुष्प का भक्षण करके अथवा दूध पीकर, सत्य वचन बोलते हुए एवं व्रत में दृढ़ रहकर अश्विनी कुमारों के मन्त्र का जप करता है, वह सभी शुभफलों को प्राप्त करता है।

अश्विभ्यां नम इत्यैव मन्त्रः शास्त्रे प्रकीर्तितः ।
पुष्पाहुतिं ततो दद्यात् पायसेनाथवा सुधीः ॥१६॥

शास्त्र में *अश्विभ्यां नमः* ऐसा मन्त्र बताया गया है। इस मन्त्र के द्वारा बुद्धिमान् व्यक्ति फूलों से अथवा खीर से आहुति दे।

तेषां सिद्धिर्जपादेव ये वेदे नाधिकारिणः ।
ततो ध्यानेन महता नासत्यौ प्रार्थयेद्व्रती ॥१७॥

जो (स्त्री-शूद्रादि) वेदमन्त्रों के अधिकारी नहीं हैं, उन्हें केवल जप से ही सिद्धि प्राप्त हो जायेगी (वे हवन न करें) । इसके बाद व्रत को करने वाला महान् ध्यान के द्वारा अश्विनीकुमारों की प्रार्थना करे।

तौ नासत्यावश्विनौ वां भजेऽहं
रूपञ्च यौ ददतुर्भार्गवाय ।
आथर्वणो ब्रह्मविदः शिरञ्च
ररक्षतुर्यौ त्रिदशेन्द्रकोपात् ॥१८॥
एवं वत्सरपर्यन्तं नियतं व्रतमाचरेत् ।
सवत्सां गाञ्च विप्रेभ्यो दद्यादुद्यापने व्रती ॥१९॥

जिन्होंने च्यवन ऋषि को सुन्दर रूप प्रदान किया था, जिन्होंने ब्रह्मवेत्ता दधीचि के मस्तक की इन्द्र के क्रोध से रक्षा की थी, उन दोनों अश्विनी कुमारों की मैं भक्ति करता हूँ। इस प्रकार से एक वर्ष तक व्रत करके उद्यापन में व्रती ब्राह्मणों को बछड़े के साथ गाय का दान करे।

॥इति षष्ठः पटलः॥

--*

॥अथ सप्तमः पटलः॥

भरणीनक्षत्रव्रतवर्णनम्

भरणीषु च यो जातो यमस्य व्रतमाचरेत् ।
स्वनक्षत्रागमे नद्यास्तटं गत्वा निशामुखे ॥०१॥
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यामथवा पूजयेद्यमम् ।
सुमेरोर्दक्षिणे भागे यस्य संयमनी पुरी ॥०२॥

जिस व्यक्ति ने भरणी नक्षत्र में जन्म लिया है वह यमराज का पूजन करे। अपने जन्मनक्षत्र के आने पर रात्रि के प्रारम्भ होने के समय नदी के तट पर जाए अथवा (नक्षत्र के रात्रिव्यापी न होने पर) कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को उन यमराज की पूजा करे जिनकी संयमनी नाम की पुरी सुमेरु के दक्षिण भाग में है।

यमो यम इति श्रुत्वा भीत्या नैवोन्मना भवेत् ।
आत्मा च यमितो येन स देवस्तु यमः स्मृतः ॥०३॥

यम-यम ऐसा सुनकर भयभीत होकर उदास न हो जाये। जो आत्मा को नियन्त्रित रखते हैं, उन देव को यम कहा गया है।

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च ।
वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च ॥०४॥
वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः ।
एवं प्रणम्य देवेशं शास्तारं छद्मकर्मणाम् ॥०५॥

धूम्राभं चित्रगुप्तञ्च कालपाशौ तरस्विनौ ।
नाकं मृत्युञ्च धर्मज्ञं गन्धमाल्यादिभिर्यजेत् ॥०६॥

यम के लिए, धर्मराज के लिए, मृत्यु और अन्तक के लिए, वैवस्वत के लिए, काल के लिए, सभी प्राणियों का अन्त करने वाले के लिए, वृकाग्नि को उदर में धारण करने वाले के लिए, चित्र और चित्रगुप्त के लिए प्रणाम है, ऐसा बोलकर प्रणाम करने और फिर छिप कर दुराचार करने वाले लोगों पर शासन करने वाले धूम्रवर्ण के यमराज, चित्रगुप्त, शीघ्रगति वाले कालदण्ड एवं यमपाश, स्वर्ग, मृत्यु तथा धर्म को जानने वाले धर्मराज की चन्दन, माला आदि के द्वारा पूजा करे।

मनुर्नमो यमायेति तिलाँश्च जुहुयाद्व्रती ।
स्वाहाकारश्च मन्त्रान्ते पूर्वभागे च वर्तुलः ॥०७॥
स्त्रीशूद्रव्रात्यमिश्रेभ्यो नास्ति होमविधानकम् ।
केवलं मन्त्रजापोऽस्ति स्वाहाप्रणववर्जितः ॥०८॥

यमाय नमः इस मन्त्र के द्वारा व्रती तिल से हवन करे। मन्त्र से पहले ॐ एवं अन्त में स्वाहा लगा लें (*ॐ यमाय नमः स्वाहा*) । स्त्री, शूद्र, व्रात्य एवं वर्णसंकर के लिए हवन का विधान नहीं है। वे स्वाहा और प्रणव के बिना *यमाय नमः* मन्त्र का मात्र जप कर लें।

कृसरं भोजयेद्विप्रान्यथाशक्तिसमन्वितः ।
एवं वै वर्षपर्यन्तं व्रतं कृत्वा नरोत्तमः ॥०९॥

व्रतान्ते भूमिदेवेभ्यो गां दत्वा परितोषयेत् ।
भरणीजातकानाञ्च यमस्यैवं महाव्रतम् ॥१० ॥

अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मणों को खिचड़ी का भोजन कराये। इस प्रकार एक वर्ष तक व्रत करके अन्त में ब्राह्मणों को गौदान करके सन्तुष्ट करे। भरणी नक्षत्र के जातकों के लिए इस प्रकार से यह यमराज का महान् व्रत बताया गया है।

॥इति सप्तमः पटलः ॥

--*

॥ अथाष्टमः पटलः ॥

धनिष्ठाकृत्तिकानक्षत्रव्रतवर्णनम्

धनिष्ठाकृत्तिकाजातस्स आग्नेयव्रतञ्चरेत् ।
हव्यकव्यवहो देवो जातवेदो हुताशनः ॥०१॥
प्रातर्मध्याह्नकाले वा समुपोष्य नियम्य च ।
नवम्यामथवा भाह्ने पूजयेद्विन्ध्यवासिनीम् ॥०२॥
ततो दद्यात् सविधिना सशुकं पञ्जरान्वितम् ।
विप्राय हाटकं दत्वा सुवाग्मी जायते पुमान् ॥०३॥
मेषारूढं शिरोभ्याञ्च चतुःश्रृङ्गसमन्वितम् ।
स्वाहाशक्तिधरं ध्यायेदनलं हुतभोजिनम् ॥०४॥
बीजन्तु पूर्वमुच्चार्य प्रवदेज्जातवेदसे ।
शक्तिमन्ते प्रयुञ्जीत अन्येभ्यश्च नमः पदम् ॥०५॥

धनिष्ठा एवं कृत्तिकानक्षत्रसमूह में जन्म लेने वाला व्यक्ति अग्निव्रत का आचरण करे। वेदों से उत्पन्न, वेदों को जानने वाले, आहुतियों का भक्षण एवं हव्य-कव्य का वहन करने वाले देवता अग्नि हैं। संयम-पूर्वक उपवास करके प्रातःकाल अथवा मध्याह्नकाल में, नवमी तिथि अथवा अपने जन्मनक्षत्र के दिन विन्ध्यवासिनी देवी का पूजन करे। उसके बाद पिंजरे के साथ तोते का दान करे। ब्राह्मण को सुवर्ण का दान करने से व्यक्ति अच्छी वाणी से सम्पन्न होता है। मेष पर बैठे हुए, दो मस्तक एवं चार सींगों से युक्त, स्वाहारूपिणी शक्ति को धारण करने वाले, आहुतियों का भक्षण करने वाले अग्निदेव का

ध्यान करे। पहले अग्नि का बीजमन्त्र (रं), बोलकर फिर जातवेदसे पद को कहे। उसके बाद अंत में अग्नि की शक्ति (स्वाहा) का प्रयोग करे। अन्य लोग (जो वेदाधिकार से रहित हैं, वे) नमः का प्रयोग करें। (वेदाधिकार वाले *रं जातवेदसे स्वाहा* कहें और स्त्री शूद्रादि के लिए *रं जातवेदसे नमः* मन्त्र है)

द्वादश्यां पललं भोज्यं गुह्यकेभ्यो नरोत्तमः ।
विप्रेभ्यो भोजनं दद्याद्वह्निध्यानपरायणः ॥०६॥
न मांसं पललभ्रान्त्या कल्याणार्थी विचारयेत् ।
सैक्षवं तिलचूर्णञ्च पललं प्रोच्यते बुधैः ॥०७॥
विष्कुम्भादिकुयोगेषु भवेन्नक्तव्रती पुमान्।
इत्थमग्निव्रतं प्रोक्तं कृत्तिकाजातकाय च ॥०८॥

अग्नि का ध्यान करने वाला श्रेष्ठ मनुष्य द्वादशी तिथि में गुह्यकगणों के निमित्त पलल का भोग प्रदान करे और फिर ब्राह्मणों को भी भोजन कराये। कल्याण की इच्छा करने वाला व्यक्ति पलल शब्द का अर्थ भ्रम से मांस न समझ ले, तिलकुट को विद्वानों के द्वारा पलल कहा जाता है। विष्कुम्भ आदि अशुभ योगों के आने पर रात्रि में एक ही समय का भोजन करे। इस प्रकार से कृत्तिका नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों के लिए इस प्रकार से अग्निव्रत कहा गया है।

॥इत्यष्टमः पटलः॥

--*

॥अथ नवमः पटलः॥

अभिजिद्रोहिणीजातकानां व्रतवर्णनम्

अभिजिद्रोहिणीभूतास्ते कुर्वन्तु यशःप्रदम् ।
ब्रह्मणः सुव्रतं लोके तद्विधानं वदाम्यहम् ॥०१॥
पूर्णायामथवर्क्षे वा व्रतञ्च प्रतिपत्तिथौ ।
कर्तव्यं शैलशृङ्गे वा सरित्कूले वनान्तरे ॥०२॥

जो जातक अभिजित् अथवा रोहिणी नक्षत्र में जन्म लिए हैं वे ब्रह्माजी के, संसार में यश को देने वाले इस व्रत को करें। उसका विधान कहता हूँ। पूर्णिमा, जन्मनक्षत्र के दिन अथवा प्रतिपदा तिथि को यह व्रत नदी के किनारे, पर्वत के शिखर पर अथवा जंगल में जाकर करना चाहिये।

मनसो यस्य रुद्रोऽभूद्वक्षसो माधवस्तथा ।
मुखेभ्यश्च चतुर्वेदास्तं वन्देऽहं चतुर्मुखम् ॥०३॥
इति ध्यात्वा विधानोक्तां ब्रह्मपूजां समाचरेत् ।
जपनीयात्र गायत्री वेदमार्गवशानुगैः ॥०४॥
वेदाधिकारहीनेभ्यो ब्रह्मणे नम ईरितम् ।
स्वाहाधिकारसम्पन्नो जुहुयाच्छन्दसा व्रती ॥०५॥

जिनके मन से रुद्र, वक्षस्थल से विष्णु एवं मुख से चारों वेद प्रकट हुए हैं, उन चतुर्मुख (ब्रह्माजी) की मैं वंदना करता हूँ। इस प्रकार से

ध्यान करके (कर्मकाण्ड के) विधान में बताए गए अनुसार ब्रह्मा की पूजा का आचरण करे। वेदमार्ग के वश में चलने वाले (द्विजातियों) के लिए गायत्री का जाप विहित है। वेदाधिकार से रहित (स्त्री-शूद्रादि) लोगों के लिए *ब्रह्मणे नमः* मन्त्र कहा गया है। स्वाहाधिकार से सम्पन्न व्यक्ति गायत्री मन्त्र से ही हवन करे।

सर्वे ब्रह्ममया लोकाः सर्वं ब्रह्मणि संस्थितम् ।
इति विज्ञाय यत्नेन पूजयेदब्जसम्भवम् ॥०६॥
शङ्खभेरीनिनादैश्च महद्गायनसङ्कुलैः ।
नानाद्रव्योपहारैश्च तोषितव्यो जगत्पिता ॥०७॥
एवं वै रौहिणेयानां व्रतं ब्रह्मांशयोजकम् ।
पर्वकाले विधातव्यं विद्याकामैर्विशेषतः ॥०८॥

सभी लोक ब्रह्ममय हैं, सबकुछ ब्रह्मा में स्थित है, ऐसा जानकर कमल से उद्भूत ब्रह्माजी का पूजन करे। शंख एवं भेरी के नाद से, महान् गीत (स्तोत्रों) के गायन से, विभिन्न द्रव्य एवं उपहारों के द्वारा जगत्पिता ब्रह्माजी सन्तुष्ट किये जाने चाहिए। इस प्रकार से ब्रह्मा के अंश में जोड़ने वाला यह व्रत रोहिणी नक्षत्र में जन्म लिए हुए लोगों के लिए कहा गया है। प्रत्येक पर्व (पूर्णिमा) को यह व्रत विद्या की कामना करने वालों के द्वारा विशेषरूप से किया जाना चाहिए।

॥इति नवमः पटलः॥

--*

॥अथ दशमः पटलः ॥

मृगशिराजातकानां व्रतवर्णनम्

कर्तव्यमिन्दुसम्बन्धिव्रतं मार्गसमुद्भवैः ।
चान्द्रायणञ्च बलिभिः शेषैश्चन्द्रव्रतं शुभम् ॥०१॥
पूर्णिमायां द्वितीयायामथवा सोमवासरे ।
सितपक्षे च नक्तादौ पूजयेदुडुनायकम् ॥०२॥
पयोभोजी धराशायी ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।
चन्द्रं पूर्णकलायुक्तं सनक्षत्रं प्रपूजयेत् ॥०३॥
गगनार्णवमाणिक्य चन्द्र दाक्षायणीपते ।
आत्रेय वारिसम्भूत शिवस्थ शिवदो भव ॥०४॥
विशेषार्घ्यं ततो दद्याद्यतोऽर्घ्यं तत्प्रियं मतम् ।
सोमायार्घ्यप्रदानेन सुरूपो जायते नरः ॥०५॥
ध्वामित्युक्त्वा च सोमाय नमः पदमुदीरयेत् ।
तन्त्रेषु सोममन्त्रोऽयमेवमेव प्रकीर्तितः ॥०६॥
वत्सरान्ते सितं वस्त्रं धेनुं दद्यात्पयस्विनीम् ।
रौप्यं हैममयं चन्द्रं तिलं शाल्यं तथैक्षवम् ॥०७॥
नमः सोमाय सौम्याय नमः शीतात्मने तथा ।
पठित्वा सर्वकर्माणि चन्द्रतेजसि योजयेत् ॥०८॥
एवं मृगशिराजातः कुर्यादिन्दुव्रतं शुभम् ।
नक्षत्रदोषशान्त्यर्थमिष्टसम्पत्तिसिद्धये ॥०९॥

मृगशिरा में जन्म लेने वालों के द्वारा चन्द्रमासम्बन्धी व्रत किया जाना चाहिए। बलवान् लोगों के द्वारा चान्द्रायण एवं शेष जनों के द्वारा शुभ चन्द्रव्रत किया जाना चाहिए। पूर्णिमा, शुक्लपक्ष की द्वितीया अथवा सोमवार को रात्रि की प्रारम्भवेला में नक्षत्रपति चन्द्रमा का पूजन करे। व्रत में दुग्ध का पान करे, भूमिशयन करे, ब्रह्मचर्य का पालन करे एवं इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखे। ऐसा होकर अपनी सभी कलाओं से पूर्ण चन्द्रमा का नक्षत्रों के साथ पूजन करे। हे आकाश-रूपी समुद्र के माणिक्य ! हे दक्षपुत्री (नक्षत्रों) के पति चन्द्रमा ! हे अत्रिपुत्र ! हे (समुद्रमंथन में) जल से उत्पन्न ! हे शिवजी के ऊपर स्थित ! आप मेरे लिए कल्याणदाता हों। उन (चन्द्रमा) को अर्घ्य प्रिय है अतएव विशेषार्घ्य दे। चन्द्रमा को अर्घ्य देने से व्यक्ति सुन्दर रूप वाला हो जाता है। 'ध्वां', ऐसा बोल कर सोमाय नमः पद का उच्चारण करे। *ध्वां सोमाय नमः* इस प्रकार से ही चन्द्रमा का मन्त्र तन्त्रों में बताया गया है। एक वर्ष व्यतीत होने पर श्वेत वस्त्र, दुधारू गाय, चांदी या सोने का चन्द्रमा, (श्वेत) तिल, चावल एवं गुड़ अथवा मिश्री का दान करे। सौम्य स्वरूप वाले, शीतलता को अपने अंदर धारण करने वाले सोम को नमस्कार है, ऐसा पढ़कर अपने सभी कर्मों को चन्द्रमा के तेज में नियोजित कर दे। इस प्रकार से मृगशिरा में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने नक्षत्रसम्बन्धी दोषों की शान्ति के लिए तथा अभीष्ट सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए शुभ चन्द्रव्रत को करे।

॥इति दशमः पटलः ॥

--*

॥अथैकादशः पटलः॥

आर्द्रोत्तराभाद्रपदजातकानां व्रतवर्णनम्

अथ रौद्रं प्रवक्ष्याम्यार्द्रासु जातस्य श्रेयसे ।
तथोत्तराभाद्रपदे जाताय कथितं पुरा ॥०१॥

अब आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लिए हुए लोगों के लिए रौद्रव्रत का वर्णन करता हूँ तथा इसे उत्तराभाद्रपद में जन्म लिए व्यक्ति के लिए पूर्व-काल में कहा गया है।

पूजनं शैवशास्त्रोक्तं येषु रुद्रगणाः स्थिताः ।
सोमाह्ने जन्मनक्षत्रेऽथवामोनतिथौ व्रती ॥०२॥
सायंकाले ततस्त्वेकभुक्तेन शिवमर्चयेत् ।
नमो भगवते रुद्रायेति रौद्रो मनुः स्मृतः ॥०३॥

जिसमें रुद्रगण स्थित रहते हैं, ऐसे शैवशास्त्रों में यह पूजन बताया गया है। सोमवार, जन्मनक्षत्र के दिन अथवा कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तिथि को व्रत करने वाला एक समय का ही व्रतयोग्य आहार ग्रहण करके सायंकाल में शिवजी की पूजा करे। *नमो भगवते रुद्राय* इस प्रकार से रुद्र का मन्त्र कहा गया है।

शिवतत्त्वविहीनस्तु नास्ति किञ्चिद्भवार्णवे ।
एवं विचिन्त्य सततं शिवध्यानपरो भवेत् ॥०४॥

संसारसागर में शिवतत्त्व से हीन कुछ भी नहीं है, ऐसा सोचकर सदैव शिव जी के ध्यान में लगा रहे।

वेदान्तसारसन्दोहः कपाली नीललोहितः।
पञ्चाननोऽष्टमूर्तिश्च रुद्रो विद्रावयेद्द्रुतम् ॥०५॥

वेदान्त के सार का दोहन करने वाले, कपाल धारण करने वाले, नीललोहितसंज्ञक, सद्योजातादि पांच मस्तक एवं भवादि आठ मूर्तियों वाले रुद्र, मेरे दुखों का विद्रावण करें।

ततो यजेन्महादेवं सगणञ्च सशक्तिकम् ।
त्रिशूलञ्च पिनाकञ्च वासुकिं डमरुं तथा ॥०६॥

इसके बाद गणों में शक्ति (पार्वती) के साथ महादेव का एवं त्रिशूल, पिनाक धनुष, वासुकि एवं डमरू का पूजन करे।

गोमूत्रयावकं भुक्त्वा तृतीयायां शिवालये ।
कार्तिकस्यासिते पक्षे सङ्कल्पं धारयेद्व्रती ॥०७॥

कार्तिक कृष्णपक्ष की तृतीया को गोमूत्र में पकाए गए जौ को खाकर शिवमन्दिर में व्रत करने वाला सङ्कल्प को धारण करे।

केवलं नक्तभोजी च भूत्वा वत्सरविस्तरम् ।
कुर्वन्रुद्राज्ञया कर्म दिवसं यापयेद्व्रती ॥०८॥

एक वर्ष के विस्तार तक केवल रात्रि को भोजन करने वाला व्यक्ति रुद्र की आज्ञा से ही कर्म करता हुआ दिनों को व्यतीत करे।

वर्षान्ते शैवविप्रञ्च दानं हैमस्य गोपतेः ।
तैलिकायाश्च धेनोर्वा सुवर्णवृषभस्य च ॥०९॥

वर्ष के अन्त में शैव ब्राह्मण को स्वर्ण तथा बैल का दान करे अथवा तिल से बनी गाय एवं सोने से बने बैल का दान करे।

एतद्रुद्रव्रतं नाम सदा कल्याणकारकम् ।
कर्तव्यं सुप्रयत्नेन सर्वाशुभहरं नृणाम् ॥१०॥

इस प्रकार से सदैव कल्याण करने वाले, मनुष्यों के सभी अशुभों का नाश करने वाले रुद्र नाम व्रत को भली प्रकार से प्रयत्न करके करना चाहिए।

॥इत्येकादशः पटलः॥

--*

॥अथ द्वादशः पटलः ॥

पुनर्वसुपूर्वाफाल्गुनीचित्रानुराधारेवतीनक्षत्रव्रतवर्णनम्

पुनर्वसुभसंजातश्चैत्रो रैवतकालजः ।
राधेयश्चैव पूर्वायां फाल्गुन्यां जन्मगो नरः ॥०१॥
सर्वाशुभविनाशाय प्राप्तये सम्पदस्तथा ।
आदित्यानदितिञ्चैव यजेदादित्यसंज्ञकैः ॥०२॥
व्रतैस्तत्रार्चयेद्धीमान् कश्यपं स्वजनान्वितम् ।
धाता मित्रोऽर्यमा पूषा शक्रोंऽशो वरुणो भगः ॥०३॥
त्वष्टा विवस्वान्सविता विष्णुर्द्वादश ईरिताः ।
प्रतिमासं तु शुक्लायां द्वादश्यां तान् व्रतोत्सुकः ॥०४॥
केशवस्य गृहं गत्वा प्रातःकाले प्रपूजयेत् ।
विधिनादितिजानृक्षदिवसे दितिकश्यपौ ॥०५॥
आदित्येभ्यो नमो मन्त्रं पूर्वमां प्रवदेद्व्रती ।
यदि चेदधिकारी स्याद्व्रतुलञ्चापि योजयेत् ॥०६॥
एवं समासमापन्ने प्रतिमा हैमनिर्मिताः ।
रौप्या वा क्षीणशक्तिश्च विधिना पूजयेच्च ताः ॥०७॥
भोजयित्वा द्विजानत्र मधुरान्नं सुसंस्कृतम् ।
ततो वै द्वादशादित्यप्रतिमादानमाचरेत् ॥०८॥
त्रिरात्रोपोषितो दद्यात्फाल्गुने भवनं शुभम् ।
यदि वा शक्तिसम्पन्नो न कार्पण्यं प्रदर्शयेत् ॥०९॥

पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, अनुराधा, चित्रा एवं रेवती के काल में उत्पन्न बुद्धिमान् व्यक्ति सभी अशुभों के विनाश एवं सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए आदित्यसंज्ञक व्रतों के द्वारा बारह आदित्य एवं अदिति की, तथा परिवार के साथ कश्यप की पूजा करे। धाता, मित्र, अर्यमा, पूषा, इन्द्र, अंशुमान्, वरुण, भग, त्वष्टा, विवस्वान्, सविता एवं विष्णु, ये बारह आदित्य बताए गए हैं। व्रत की इच्छा वाला व्यक्ति प्रत्येक महीने के शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि अथवा जन्मनक्षत्र के दिन प्रातःकाल में विष्णुमन्दिर जाकर विधिपूर्वक आदित्य, कश्यप एवं अदिति का पूजन करे। आदित्येभ्यो नमः मन्त्र है। व्रती मन्त्र से पहले आं बोले (*आं आदित्येभ्यो नमः*)। यदि प्रणवाधिकार से युक्त है तो ॐ जोड़ ले (*ॐ आं आदित्येभ्यो नमः*) । इस प्रकार से एक वर्ष बीतने पर सोने की बनी प्रतिमाओं का, अथवा शक्ति कम होने पर चांदी की प्रतिमाओं का पूजन करे। इस समय ब्राह्मणों को मधुर एवं पवित्र भोजन कराकर बारह आदित्य की प्रतिमाओं का दान करे। यदि शक्तिसम्पन्न हो तो तीन रात तक उपवास करके फाल्गुन (शुक्ल द्वादशी) को भवन का दान करे, सामर्थ्य रहने पर इसमें कृपणता न करे।

सुव्रती मनुजः कृत्वा द्वादशादित्यसंज्ञकम् ।
व्रतं त्रिदशप्रस्वाश्च मुच्यते सर्वतो भयात् ॥१०॥

सुन्दर व्रत को करने वाला मनुष्य देवमाता अदिति के इस द्वादशादित्यसंज्ञक व्रत को करके सभी भयों से मुक्त हो जाता है।

॥इति द्वादशः पटलः ॥

॥अथ त्रयोदशः पटलः ॥

पुष्यश्रवणर्क्षजातकानां व्रतवर्णनम्

पुष्यश्रवणजातेभ्यो वैष्णवं व्रतमिष्यते ।
यतो देवगुरुर्विष्णुः साक्षाल्लोकहितोत्सुकः ॥०१॥
द्वादश्यां वा गुरोर्वारे जन्मर्क्षे हरिमन्दिरे ।
वैष्णवाचारविधिना वैकुण्ठपतिमर्चयेत् ॥०२॥

पुष्य एवं श्रवण नक्षत्र में जन्मे हुए लोगों के लिए वैष्णव व्रत कहा गया है क्योंकि देवगुरु बृहस्पति, लोकों का हित करने के हेतु उत्सुक, साक्षात् विष्णु ही हैं। द्वादशी या गुरुवार को या जन्मनक्षत्र के दिन हरिमन्दिर में वैष्णवाचार की विधि के अनुसार वैकुण्ठपति विष्णु की अर्चना करे।

गुं बीजं पूर्वमुच्चार्य गुरवे नम उच्चरेत् ।
नमो नारायणायेति मन्त्रमन्यञ्च सञ्जपेत् ॥०३॥
चातुर्मास्ये उषःस्नायी भवेद्विष्णुव्रती नरः ।
विप्राय भोजनं दद्यात्कार्तिके धेनुदो भवेत् ॥०४॥

पहले *गुं* बीज बोलकर फिर *गुरवे नमः* कहे। उसके बाद *नमो नारायणाय* ऐसे दूसरे मन्त्र का जप करे। विष्णु का व्रत करने वाला व्यक्ति चातुर्मास्य में प्रातःकाल स्नान करे, ब्राह्मणों को भोजन कराये। कार्तिक मास में गोदान करे।

घृतकुम्भं ततो दत्त्वा सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
एकादश्यां तु नक्ताशी रात्रौ जागरणञ्चरेत् ॥०५॥
हैमविष्णुञ्च सम्पूज्य हैमचक्रं सुदर्शनम् ।
तद्वच्छङ्खं तु सौवर्णञ्चैत्रे चित्रासु निर्वपेत् ॥०६॥

उसके बाद घी से भरे घड़े का दान करके सभी कामनाओं को प्राप्त कर लेता है। एकादशी की रात्रि में (व्रतोचित) आहार ग्रहण करके जागरण करे। विष्णु की स्वर्णप्रतिमा का पूजन करके सुन्दर दिखने वाले सोने का चक्र एवं वैसा ही सोने का शङ्ख चैत्र मास में चित्रा नक्षत्र आने पर दान करे।

सुमङ्गलैर्गीतवाद्यैः स्तोत्रपाठैर्जपादिभिः ।
तोषितव्यो महाविष्णुर्यो लोकानां गुरुः स्मृतः ॥०७॥
एतद्विष्णुव्रतं नाम वैकुण्ठस्थानदं नृणाम् ।
यं कृत्वा पुरुषा नार्यस्तरन्ति भवसागरम् ॥०८॥

सुन्दर एवं मङ्गलमय गीत, वाद्य, स्तोत्रपाठ एवं मन्त्रजप आदि के द्वारा महाविष्णु को सन्तुष्ट करना चाहिए क्योंकि वे सभी लोकों के गुरु बताये गये हैं। इस प्रकार मनुष्यों को वैकुण्ठ में स्थान देने वाला यह विष्णुव्रत बताया गया है, जिसे करके नर या नारी संसारसागर को पार कर जाते हैं।

॥इति त्रयोदशः पटलः॥

--*

॥अथ चतुर्दशः पटलः॥

अश्लेषानक्षत्रव्रतवर्णनम्

आश्लेषेयः स्वनक्षत्रे महोरगव्रतञ्चरेत् ।
पञ्चम्यां सितपक्षस्य श्रावणस्य विशेषतः ॥०१॥
निम्नगायास्तटं गत्वाथवा सर्पबिलम्प्रति ।
व्रती पुष्करमाविश्योपबिल्वं वा शिवालयम् ॥०२॥
निशायां पूजयेन्नागान्काद्रवेयान्महाबलान् ।
पूः पूः पूः पूस्ततो वाच्या व्रतिना सर्पवद्ध्वनिः ॥०३॥

अश्लेषा में जन्म लेने वाला व्यक्ति जन्मनक्षत्र के दिन, विशेषकर श्रावण में शुक्लपक्ष की पञ्चमी को सर्पों का व्रत करे। व्रत को करने वाला व्यक्ति नदी के किनारे अथवा सर्प के बिल के पास जाकर, सरोवर में प्रवेश करके, बिल्ववृक्ष के पास अथवा शिवालय में रात्रि को कद्रू के पुत्र महाबली नागों की पूजा करे। व्रती के द्वारा सांप की फुंफकार के समान *पूः-पूः-पूः-पूः* ऐसी ध्वनि की जानी चाहिए।

सर्पेभ्यो नम इत्युक्त्वा पूजयेद्बिलवासिनः ।
शर्करादुग्धलाजाभिर्नैवेद्यं तान्निवेदयेत् ॥०४॥
कल्याणं वासुकिं शेषं पद्मनाभञ्च कम्बलम् ।
शङ्खपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा ॥०५॥
कर्कोटमार्यकञ्चैव पूजयेन्नागयूथपान् ।
तामसी कूजनी काली तरणी भैरवी तथा ॥०६॥

शारदा पूजितव्याश्च सर्वाः पन्नगशक्तयः ।
पयोभोजी शिवाराध्यो भूत्वा तद्व्रतमाचरेत् ॥०७॥

उसके बाद *सर्पेभ्यो नमः* ऐसा कहकर बिल में रहने वाले सर्पों का पूजन करे। मिश्री, दूध एवं लाजा (लावा) का भोग निवेदित करे। कल्याण, वासुकि, शेष, पद्मनाभ, कम्बल, शंखपाल, धृतराष्ट्र, तक्षक, कालिय, कर्कोटक, आर्यक आदि नागपतियों की पूजा नाममन्त्र से करे। तामसी, कूजनी, काली, तरणी, भैरवी, शारदा आदि ये सब नागशक्तियाँ हैं, इनकी भी पूजा करनी चाहिए। दुग्ध पीकर रहे, शिव की आराधना करते हुए इस व्रत का आचरण करे।

समान्ते स्वर्णनागञ्च दद्याद्विप्राय शर्मणे ।
एवं नागव्रतं कुर्यादश्लेषासु समुद्भवः ॥०८॥

एक वर्ष बीतने पर शीलवान् ब्राह्मण को सोने का नाग दान करे। इस प्रकार से अश्लेषा में जन्म लिए हुए व्यक्ति नागव्रत करे।

॥इति चतुर्दशः पटलः॥

--*

॥अथ पञ्चदशः पटलः ॥

मघोत्तराफाल्गुनीजातकानां व्रतवर्णनम्

मघोत्तराफाल्गुनीषु यो जातः पैतृके व्रते ।
अग्निष्वादर्यमादेवं पूजयेत्पितृप्रीतये ॥०१॥
स्वर्क्षेऽमायाञ्च मध्याह्ने गत्वा सिन्धुतटम् ।
तीर्थादिषु सरित्कूलं श्राद्धकर्म समाचरेत् ॥०२॥

मघा एवं उत्तराफाल्गुनी में जन्म लिया व्यक्ति पितरों की प्रसन्नता के लिए पितृव्रत के अन्तर्गत अग्निष्वात् एवं अर्यमा देव की पूजा करे। अपने जन्मनक्षत्र के दिन अथवा अमावस्या के मध्याह्न में समुद्र के किनारे अथवा तीर्थों में नदी किनारे जाकर श्राद्ध करे।

अमायाञ्च जलाहारी पञ्चदश्यां पयोव्रती ।
यावद्वर्षं भवेत्पूर्णं तावदेवं समाचरेत् ॥०३॥

अमावस्या में जल पीकर तथा पूर्णिमा को दूध पीकर रहे। एक वर्ष की पूर्णता तक इसका पालन करे।

कुशोदकेन संस्नाप्यामायां कुर्यात्तिलार्पणम् ।
वर्षासु दीपदानेन पितॄणामनृणो भवेत् ॥०४॥

कुशमिश्रित जल से स्नान करके अमावस्या को तिलोदक से तर्पण करे। वर्षा ऋतु में पितरों का दीपदान करके व्रती ऋणमुक्त होता है।

पितृभ्यो नम इत्युक्त्वार्यमणे नम उच्चरेत् ।
पिशङ्गवर्णवासांसि जलकुम्भयुतानि च ॥०५॥
समान्ते श्राद्धकृद्दद्यात् पञ्च गास्तु पयस्विनीः ।
पितृव्रतमिदं प्रोक्तं सर्वपितृप्रियङ्करम् ॥०६॥

पितृभ्यो नमः कहकर फिर *अर्यमणे नमः* का उच्चारण करे। भूरे-पीले रंग के वस्त्र एवं जल से भरे घड़ों का दान करे। एक वर्ष के पूर्ण होने पर श्राद्ध करके पांच दुधारू गायों का दान करे। यह सभी पितरों को प्रिय लगने वाला पितृव्रत कहा गया है।

॥इति पञ्चदशः पटलः॥

--*

॥अथ षोडशः पटलः ॥

हस्तनक्षत्रजातकानां व्रतवर्णनम्

देवदेवस्य सूर्यस्य व्रतं सर्वेप्सितप्रदम् ।
यो हस्तभे समुद्भूतस्स कुर्याद्भास्करव्रतम् ॥०१॥
सैन्धवं मधु मांसञ्च कांस्यपात्रेषु भोजनम् ।
मैथुनमनृतां वाणीं क्षारस्नानं रवौ त्यजेत् ॥०२॥

जिसने हस्तनक्षत्र में जन्म लिया है, वह देवाधिदेव सूर्य का सभी अभीष्ट को प्रदान करने वाला भास्करव्रत करे। रविवार को नमक, मधु, मांस, कांस्यपात्र में भोजन, मैथुन, असत्य बोलना एवं क्षार-साबुन आदि से स्नान का परित्याग कर दे।

कृत्वा माघेऽरुणस्नानं विप्रदम्पतिमर्चयेत् ।
भोजयित्वा यथाशक्ति माल्यवस्त्रादिभिर्यजेत् ॥०३॥
संज्ञादिती तथा छायां सूर्यपार्श्वे प्रपूजयेत् ।
घृणिरुक्त्वा ततः सूर्य आदित्यः सम्वदेद्व्रती ॥०४॥

माघ में प्रातःकाल स्नान करके ब्राह्मण दम्पति का पूजन करे। उन्हें भोजन कराकर अपनी शक्ति के अनुसार माला-वस्त्र आदि के द्वारा उनकी पूजा करे। सूर्यदेव के बगल में (सूर्य की दाहिनी ओर) छाया एवं अदिति तथा (सूर्य के बायें भाग में) संज्ञादेवी का पूजन करे। व्रत को करने वाला घृणिः बोलकर फिर सूर्य आदित्यः बोले (*घृणिः सूर्य आदित्यः*)।

वेदाधिकारसम्पन्नो गायत्रीजपमाचरेत् ।
सूर्याथर्वशिरश्चापि प्रपठेद्व्रतिनां वरः ॥०५॥

वेदाधिकार से सम्पन्न व्यक्ति गायत्री का जप करे। व्रतियों में श्रेष्ठ व्यक्ति सूर्याथर्वशीर्ष का भी पाठ करे।

भानवे विधिना देयं सूर्यार्घ्यञ्च दिने दिने ।
मगानां पूजनं नित्यं शाकद्वीपनिवासिनाम् ॥०६॥
नक्ताहारी च सप्तम्यां वर्षान्ते धेनुदो भवेत् ।
एवं सूर्यव्रतं प्रोक्तं सूर्यलोकफलप्रदम् ॥०७॥

प्रतिदिन सूर्य को विधिपूर्वक सूर्यार्घ्य दे। प्रतिदिन शाकद्वीपवासी मगसंज्ञक ब्राह्मणों का पूजन करे। प्रत्येक सप्तमी को रात्रि में एक समय भोजन करे और वर्ष के अंत में गोदान करे। इस प्रकार से सूर्यलोक का फल प्रदान करने वाला सूर्यव्रत कहा गया है।

॥इति षोडशः पटलः॥

--*

॥अथ सप्तदशः पटलः॥

स्वातीनक्षत्रजातकानां व्रतवर्णनम्

स्वातीनक्षत्रजातेभ्यो वायुव्रतमिहोच्यते ।
सर्वगो मातरिश्वा च सर्वेषाम्प्राणवाहकः ॥०१॥
स्वातीषु शुक्लसप्तम्यामथवा शिवमन्दिरे ।
सन्ध्यायां पूजयेद्देवान्ये मरुद्गणसंज्ञकाः ॥०२॥

यहां स्वाती नक्षत्र में जन्म लेने वालों के लिए वायुव्रत कहा गया है। मातरिश्वा वायु की गति सर्वत्र है एवं वे सबों के प्राण का वहन करते हैं। स्वाती नक्षत्र में अथवा शुक्लपक्ष की सप्तमी को शिवमन्दिर में संध्याकाल में मरुद्गण नाम वाले देवताओं का पूजन करे।

वायवे नम इत्युक्त्वा वायुपूजां समाचरेत् ।
स्वस्तिं मनोजवाञ्चापि वायुवामाङ्गसंस्थिते ॥०३॥
वासुदेवस्तु मध्वाख्य आञ्जनेयो वृकोदरः ।
सर्वे वायुसमुद्भूतास्तस्यापत्यानि पूजयेत् ॥०४॥

वायवे नमः ऐसा बोलकर वायुदेव की पूजा करे। वायु के वामभाग में स्थित उनकी पत्नी स्वस्ति एवं मनोजवा का भी पूजन करे। मध्वाचार्य के नाम से प्रसिद्ध वासुदेव, अञ्जनानन्दन हनुमान् एवं वृकाग्नि को धारण करने वाले भीमसेन, ये सभी वायुदेव के अंश से उत्पन्न हुए हैं। इन वायुपुत्रों का पूजन करे।

सप्तम्यां माघशुक्लस्यार्द्रवासा यापयेन्निशाम् ।
निशान्ते शैवविप्राय धेनुदानं समाचरेत् ॥०५॥

माघ-शुक्लपक्ष की सप्तमी की रात्रि को गीले कपड़ों में रहे। रात्रि व्यतीत होने पर शैव ब्राह्मण को नवप्रसूता गाय का दान करे।

नास्ति वायुसमस्त्राता नास्ति वायुसमो बली ।
गुरुर्वायुसमो नास्ति नास्ति वायुसमो भिषक् ॥०६॥

वायु के समान रक्षक, शक्तिशाली, गुरु एवं औषधि कोई भी नहीं है।

एवं वायुव्रतं प्रोक्तं स्वातीजातस्य हेतवे ।
वायुलोकं समाप्नोति व्रतस्यास्य प्रभावतः ॥०७॥

स्वाती नक्षत्र के जातक के लिए इस प्रकार से वायुव्रत कहा गया है। इस व्रत के प्रभाव से वायुलोक को प्राप्त करता है।

॥इति सप्तदशः पटलः॥

--*

॥अथाष्टादशः पटलः ॥

विशाखानक्षत्रजातकानां व्रतवर्णनम्

विशाखासु समुद्भूत इन्द्राग्नी पूजयेन्नरः ।
पौरन्दरव्रतं कृत्वा वैश्वानरव्रतञ्चरेत् ॥०१॥

विशाखा में जन्म लेने वाला व्यक्ति इन्द्र एवं अग्नि की पूजा करे। पहले पौरन्दर व्रत करके फिर वैश्वानर व्रत का आचरण करे।

अष्टम्याञ्जन्मनक्षत्रे तत्क्षये प्रतिपत्तिथौ ।
शिवालयं ततो गत्वाथवा विष्णुसुरालयम् ॥०२॥
इन्द्राय नम इत्युक्त्वा वह्नये नम उच्चरेत् ।
होमाधिकारसम्पन्नो वैदिकैर्जुहुयाद्व्रती ॥०३॥

अष्टमी में, जन्मनक्षत्र में अथवा उसके क्षीण होने पर प्रतिपदा तिथि में शिवमन्दिर अथवा विष्णुमन्दिर में जाकर *इन्द्राय नमः* ऐसा कहकर *वह्नये नमः* का उच्चारण करे। होमाधिकार से युक्त हो तो वैदिक मन्त्रों से हवन करे।

नक्ताशी चाष्टमीषु स्याद्वत्सरान्ते च धेनुदः।
पौरन्दरं पुरं याति सुगतिव्रतकृन्नरः ॥०४॥
वर्षाद्यृतूँस्तु विप्रेभ्यो धेनुं दत्वाथ तोषयेत् ।
घृतपूर्णघटं दद्याद्वत्सरान्ते व्रती पुमान् ॥०५॥

अष्टमी की रात्रि में एक समय का व्रतोचित भोजन करे, वर्ष के अंत में गोदान करे। सुन्दर गति को देने वाले इस व्रत को करने वाला व्यक्ति इन्द्रलोक को जाता है।

वैश्वानरव्रतं नाम सर्वपापविनाशनम् ।
एवं कृत्वा विशाखासु जातो दोषाद्विमुच्यते ॥०६॥

वर्षा ऋतु में ब्राह्मणों को नवप्रसूता गौ देकर सन्तुष्ट करे। वर्ष के अन्त में व्रत को करने वाला व्यक्ति घी से भरे घड़े का दान करे। सभी पापों का नाश करने वाले इस वैश्वानर व्रत को करके विशाखा नक्षत्र का जातक सभी दोषों से मुक्त हो जाता है।

॥इत्यष्टादशः पटलः॥

--*

॥अथैकोनविंशः पटलः ॥

ज्येष्ठानक्षत्रजातकानां व्रतवर्णनम्

ज्येष्ठानक्षत्रजातेभ्यो महेन्द्रव्रतमिष्यते ।
इन्द्रियाणाञ्च देवानां पतिरिन्द्राः प्रचक्षते ॥०१॥
नम इन्द्राय मन्त्रेण सशचिमिन्द्रमर्चयेत् ।
वज्रशक्तिधरो देवो गजारूढः सहस्रदृक् ॥०२॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के जातक के लिए महान् इन्द्र का व्रत कहा गया है। इन्द्रियों एवं देवताओं के स्वामी, इन्द्रों को कहा गया है। *इन्द्राय नमः* मन्त्र से शची के साथ इन्द्र की पूजा करे। इन्द्रदेव वज्र एवं शक्ति धारण करते हैं, हाथी पर आरूढ़ हैं तथा सहस्र नेत्रों से युक्त हैं।

स्वनक्षत्रेऽथवाषाढसप्तम्यां व्रतमाचरेत् ।
नम इन्द्राय महते वृत्रघ्नाय बलारये ॥०३॥
नमो नमुचिहन्त्रे च पाकशास्त्रे नमो नमः।
एवमुक्त्वा यजेदिन्द्रं लोकपालं सुरेश्वरम् ॥०४॥

अपने जन्मनक्षत्र अथवा आषाढ़ सप्तमी में व्रत का आचरण करे। वृत्रासुर को मारने वाले, बलासुर के शत्रु, महान् इन्द्र को नमस्कार है। नमुचि को मारने वाले को नमस्कार है, पाक नामक दैत्य पर शासन करने वाले को प्रणाम है। ऐसा कहकर देवताओं के स्वामी लोकपाल इन्द्र की पूजा करे।

यदा यदा भवेद्वर्षा तदाकाशतले स्थितः ।
एवं वै वर्षपर्यन्तं धेनुमन्ते पयस्विनीम् ॥०५॥
दद्यादिन्द्रव्रती शुक्लं वस्त्रं विद्युत्समप्रभम् ।
एवमिन्द्रव्रतं प्रोक्तं स्वर्गलोकप्रदं नृणाम् ॥०६॥

जब जब वर्षा हो, तब तब आकाश के नीचे खड़ा रहे। इस प्रकार एक वर्ष व्यतीत करके अन्त में दुधारू गाय का दान करे। इन्द्र का व्रत करने वाला व्यक्ति बिजली के समान देदीप्यमान श्वेत वर्ण के वस्त्र का दान करे। इस प्रकार से मनुष्यों को स्वर्गलोक का फल देने वाला इन्द्रव्रत कहा गया है।

॥इत्येकोनविंशः पटलः॥

--*

॥अथ विंशः पटलः ॥

मूलनक्षत्रजातकानां व्रतवर्णनम्

मूलर्क्षजातकेभ्यश्च रक्षोव्रतमिहोच्यते ।
धराव्रतं तथा यस्मान्निर्ऋतिः कथ्यते धरा ॥०१॥

मूल नक्षत्र के जातक के लिए रक्षोव्रत कहा जाता है। साथ ही इसे धराव्रत भी कहते हैं क्योंकि निर्ऋति को धरा भी कहा जाता है।

नैर्ऋत्यदिक्षु ग्रामाद्वै रात्रौ गत्वा सरित्तटम् ।
चतुर्दश्याममायां वा स्वर्क्षे रक्षांसि पूजयेत् ॥०२॥

गाँव से नैर्ऋत्य दिशा में रात्रि को नदी के किनारे जाकर चतुर्दशी, अमावस्या अथवा जन्मनक्षत्र के दिन राक्षसों का पूजन करे।

रक्षोभ्यो नम इत्युक्त्वा निर्ऋतिं राक्षसाधिपम् ।
स यक्षान्पूजयेद्देवं क्रोधभैरवसंज्ञकम् ॥०३॥

वह व्रती *रक्षोभ्यो नमः* ऐसा कहकर राक्षसों के स्वामी निर्ऋति का पूजन करे। यक्षों का पूजन करे तथा क्रोधभैरव नामक देवता की पूजा करे।

यक्षणार्थञ्च रक्षार्थं वेधसा निर्मिताः पुरा ।
नमोऽस्तु यक्षरक्षोभ्यो पापान्मां रक्ष सर्वदा ॥०४॥

प्रकृति के पूजन एवं रक्षा के लिए पूर्वकाल में जो ब्रह्मा जी के द्वारा निर्मित हुए, उन यक्ष-राक्षसों को प्रणाम है, आप सदैव पाप से मेरी रक्षा करें (ऐसी प्रार्थना करे) ।

यदि वा शक्तिसम्पन्नो दद्याद्विप्राय काञ्चनीम् ।
धरां विंशपलादूर्ध्वामभावेऽन्यत्वदाम्यहम् ॥०५॥
पयोव्रती तथा मौनी पूर्णिमायाः समागमे ।
शिवमभ्यर्च्य शुक्लाङ्गं दद्याद्गोमिथुनं तथा ॥०६॥
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च प्रणमेद्राक्षसाधिपम् ।
एवं रक्षोव्रतं प्रोक्तं राक्षसेन्द्रस्य प्रीतिदम् ॥०७॥

यदि शक्ति-सामर्थ्य हो तो ब्राह्मण को बीस पल (लगभग ६०० ग्राम या साठ तोले) सुवर्ण की पृथ्वी बनाकर दान करे। यदि सामर्थ्य न हो तो दूसरा विधान बताता हूँ। पूर्णिमा के आने पर मौन धारण करे एवं दूध पीकर रहे। फिर शिव जी की पूजा करके श्वेतवर्ण वाले गाय बैल का जोड़ा (एक गाय-बैल अथवा दो गाय अथवा दो बैल) दान करे। ब्राह्मणों को भोजन कराकर राक्षसों के स्वामी को प्रणाम करे। इस प्रकार से राक्षसराज को प्रसन्न करने वाला रक्षोव्रत कहा गया है।

॥इति विंशः पटलः ॥

--*

॥अथैकविंशः पटलः ॥

पूर्वाषाढाशतभिषाजातकानां व्रतवर्णनम्

पूर्वाषाढासु वारुण्यां जाताय वरुणव्रतम् ।
जातकैस्तत्प्रकर्तव्यमृक्षदोषनिवृत्तये ॥०१॥
ॐ वौमिति मनुः प्रोक्तो वरुणस्याम्बुभूपतेः ।
पञ्चम्यामथवर्क्षे वा गत्वा पुष्करिणीतटम् ॥०२॥
सन्तती पूजयेत्तस्य वारुणीं पुष्करं तथा ।
नदीवारिधिसंयुक्तां चर्षणीं वरुणप्रियाम् ॥०३॥
द्विभुजं हंसपृष्ठस्थं दक्षिणेनाभयप्रदम् ।
वामेन नागपाशन्तु धारयन्तं सुभोगिनम् ॥०४॥
नागैर्नदीभिर्यादोभिः समुद्रैः परिवारितम् ।
ध्यात्वैवं वरुणं देवं ततस्तं प्रणमेद्व्रती ॥०५॥
वरुणो धवलो जिष्णुः पुरुषो निम्नगाधिपः ।
पाशहस्तो महाबाहुस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥०६॥

पूर्वाषाढा अथवा शतभिषा में जन्म लिए हुए व्यक्ति के लिए वरुणव्रत है। नक्षत्र के दोष की शांति के लिए जातकों के द्वारा उसे करना चाहिए। *ॐ वौं* यह जल के राजा वरुण का मन्त्र कहा गया है। पञ्चमी तिथि अथवा जन्मनक्षत्र के दिन सरोवर के किनारे जाकर वरुण की सन्तान वारुणी तथा पुष्कर का पूजन करे। नदी एवं समुद्र से युक्त वरुण की पत्नी चर्षणी का पूजन करे। दो भुजाओं वाले, हंस के पीठ पर बैठे हुए, दाहिने हाथ से अभय प्रदान करते हुए, बायें

हाथ में नागपाश धारण किये हुए, सुन्दर वस्तुओं का उपभोग करने वाले, नाग-नदी-जलचर तथा समुद्रों से घिरे हुए वरुण देवता का ध्यान करके व्रत को करने वाला व्यक्ति उन्हें प्रणाम करे। श्वेतवर्ण के, विजयशाली वरुणदेव, जो नदियों के स्वामी हैं, पाश को धारण करते हैं तथा विशाल भुजाओं वाले हैं, उनके लिए सदैव प्रणाम है।

गन्धभोगं न कुर्वीत चैत्रमासे शुचिव्रतः ।
गन्धयुक्तां शुभां शुक्तिं सितवस्त्रञ्च पायसम् ॥०७॥
दक्षिणासहितं दद्याद्विप्राय शास्त्रमानिने ।
निशि कृत्वा जले वासं प्रभाते गोप्रदो भवेत् ॥०८॥
व्रतमेवं शुभं प्रोक्तं वरुणस्य महात्मनः ।
सर्वव्याधिहरञ्चैव सर्वसौभाग्यवर्धनम् ॥०९॥

पवित्र व्रत का पालन करने वाला व्यक्ति चैत्रमास में गन्ध-उबटन-इत्र आदि का उपभोग न करे। उसके बाद सुगन्ध-चन्दन से लिपटी हुई सुन्दर मोती, श्वेतवस्त्र, खीर एवं दक्षिणा का शास्त्रवेत्ता ब्राह्मण को दान करे। रात्रि को जल में वास करके प्रातःकाल गोदान करे। महात्मा वरुण का यह सभी रोगों का नाश करने वाला एवं सभी प्रकार के सौभाग्य की वृद्धि करने वाला शुभ व्रत कहा गया है।

॥ इत्येकविंशः पटलः ॥

--*

॥ अथ द्वाविंशः पटलः ॥

उत्तराषाढाजातकानां व्रतवर्णनम्

कथिता योत्तराषाढा तस्यां जातस्य यद्व्रतम् ।
विश्वव्रतञ्च तत्प्रोक्तं विश्वेदेवप्रियङ्करम् ॥०१॥
पौषे शुक्लदशम्यां वा स्वर्क्षे केशवमन्दिरम् ।
गत्वा च विधिसम्भारैर्विश्वेदेवान् समर्चयेत् ॥०२॥

जिसे उत्तराषाढा कहते हैं, उसमें जन्म लेने वाले व्यक्ति का जो व्रत है, उसे विश्वव्रत कहा गया है जो विश्वेदेव को प्रसन्न करने वाला है। पौष मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को अथवा अपने जन्मनक्षत्र के दिन विष्णुमन्दिर में जाकर शास्त्रोक्त सामग्रियों से विश्वेदेवों का पूजन करे।

दशम्यामेकभक्ताशी भूत्वा वर्षञ्च यापयेत् ।
ततः काञ्चनब्रह्माण्डं कृत्वा दानं समाचरेत् ॥०३॥
ऋतुर्दक्षो वसुः सत्यः कालः कामो मुनिर्गुरुः ।
विप्रो रामश्च दशधा विश्वेदेवाः प्रकीर्तिताः ॥०४॥

दशमी को एक समय (रात्रि) का भोजन करता हुआ एक वर्ष व्यतीत कर सोने का ब्रह्माण्ड (प्रतिमूर्ति) बनाकर दान करे। ऋतु, दक्ष, वसु, सत्य, काल, काम, मुनि, गुरु, विप्र तथा राम, ये दस विश्वेदेव बताये गए हैं।

वर्षान्ते ब्रह्मभोजञ्चायोजयेन्व्रतकृन्नरः ।
दशधेनूस्ततो दत्वा पितृश्राद्धं समाचरेत् ॥०५॥
विश्वेभ्यः पदमुच्चार्य देवेभ्यो नम उच्चरेत् ।
एतद्विश्वव्रतं प्रोक्तं महापातकनाशनम् ॥०६॥

वर्ष के बीतने पर ब्राह्मण-भोजन का आयोजन करे और फिर व्रत को करने वाला व्यक्ति दस नवप्रसूता गायों का दान करने के बाद पितरों का श्राद्ध करे। *विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः* का उच्चारण करे। इस प्रकार बड़े बड़े पापों का नाश करने वाला विश्वव्रत कहा गया है।

॥ इति द्वाविंशः पटलः ॥

--*

॥अथ त्रयोविंशः पटलः ॥

पूर्वाभाद्रपदजातकानामज्ञातजातानाञ्च व्रतवर्णनम्

पूर्वाभाद्रपदे जातः कुर्याद्बस्तव्रतं शुभम् ।
अजो विष्णुरजो ब्रह्माजः शिवोऽजा महेश्वरी ॥०१॥

पूर्वाभाद्रपद में उत्पन्न व्यक्ति शुभ बस्तव्रत को करे। विष्णु अज हैं। ब्रह्मा भी अज हैं, शिव अज हैं तथा महेश्वरी दुर्गा भी अजा (जन्मादि विकारों से रहित) हैं।

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यामथवा जन्मभे दिने ।
शिवालयं ततो गत्वा रुद्रपूजां समाचरेत् ॥०२॥
अजाय नम इत्युक्त्वा त्रिदेवार्चनपूर्वकम् ।
ब्रह्मध्यानपरो भूत्वात्मतत्त्वं सन्निवेशयेत् ॥०३॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अथवा जन्मनक्षत्र के दिन शिवालय में जाकर रुद्र की पूजा करे। *अजाय नमः* कहकर त्रिदेवों का पूजन करके ब्रह्म का ध्यान करते हुए आत्मतत्व का चिन्तन करे।

चैत्रमासे त्रिरात्रञ्च नक्ताशी विजितेन्द्रियः ।
नदीं गत्वा ततो स्नात्वा कुर्याद्दानं यथाविधि ॥०४॥
अजाः पयस्विनीः पञ्च ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।
एतद्बस्तव्रतं प्रोक्तं सर्वव्याधिविनाशनम् ॥०५॥

चैत्रमास में एक ही समय के भोजन का नियम तीन रातों तक करके इन्द्रियवृत्ति पर नियन्त्रण रखते हुए नदी में जाकर स्नान करके विधिपूर्वक दान करे। पांच दुधारू बकरियों का दान ब्राह्मण को करे। यह सभी रोगों का नाश करने वाला बस्तव्रत कहा गया है।

अज्ञातर्क्षसमुद्भूतो नक्षत्रपुरुषस्य तु।
राशिव्रतञ्च संक्षिप्तमथवायोजयेद्व्रती ॥०६॥

जिसे अपने जन्मनक्षत्र का (अथवा अशुभ एवं पीडित नक्षत्र का) ज्ञान न हो वह नक्षत्रपुरुष के व्रत का आचरण करे अथवा संक्षिप्त रूप से राशिव्रत का आयोजन करे।

कार्तिके नक्तभुग्दद्यान्मेषं मार्गशिरे वृषम् ।
पौषमाघादिमासेषु सर्वा हाटकनिर्मिताः ॥०७॥
क्रमेण राशयो गन्धवस्त्रमाल्यैर्विभूषिताः ।
देयाश्च शुक्लपक्षान्ते प्रतिमा बहुदक्षिणाः ॥०८॥

कार्तिक मास में केवल रात्रि का भोजन करता हुआ मेष का दान करे। मार्गशीर्ष में वृष का दान करे। पौष-माघ-फाल्गुन आदि सभी महीनों में क्रम से (मिथुन-कर्क-सिंहादि) राशियों की स्वर्णप्रतिमा बनाकर चन्दन-वस्त्र-माला आदि से सुसज्जित करके बहुत सी दक्षिणा के साथ दान करे।

एतद्राशिव्रतं नाम सर्वोपद्रवनाशनम् ।
सर्वाशापूरकं तद्वत्सोमलोकप्रदायकम् ॥०९॥

सभी उपद्रवों का नाश करने वाला यह राशिव्रत कहा गया है जो सभी इच्छाओं को पूरा करके चन्द्रमा के लोक की प्राप्ति कराता है।

तस्मै नमः परमवेगवतेऽक्षराय
व्यालोत्कटाय गगनध्वजप्राणधाम्ने ।
सृष्टिस्थितिप्रलयहेतुधराय तुभ्यं
घोराय कालपुरुषाय महेश्वराय ॥१०॥

परम् वेगवान्, अविनाशी, सर्प के समान उत्कट, सूर्यादि के अस्तित्व के कारण, सृष्टि-स्थिति-प्रलय के कारणभूत महान् ईश्वर घोर काल-पुरुष के लिए प्रणाम है।

॥ इति त्रयोविंशः पटलः ॥

--*

॥ इति प्रयोगखण्डः ॥

|| इति निग्रहाचार्यकृता नक्षत्रमाहेश्वरी सम्पूर्णा ||

| इस प्रकार से निग्रहाचार्य के द्वारा लिखी गयी नक्षत्रमाहेश्वरी पूर्ण हुई |

--*

परिशिष्ट

किस नक्षत्र में कौन-कौन से अक्षर आते हैं, ये आप निम्नलिखित सारणी के माध्यम से सीखेंगे -

अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
चू, चे, चो, ला	ली, लू, ले, लो	आ, ई, ऊ, ए
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
ओ, वा, वी, वू	वे, वो, का, की	कू, घ, ङ, छ
पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
के, को, हा, ही	हू, हे, हो, डा	डी, डू, डे, डो
मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी
मा, मी, मू, मे	मो, टा, टी, टू	टे, टो, पा, पी
हस्त	चित्रा	स्वाती
पू, ष, ण, ठ	पे, पो, रा, री	रू, रे, रो, ता
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
ती, तू, ते, तो	ना, नी, नू, ने	नो, या, यी, यू
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
ये, यो, भा, भी	भू, धा, फा, ढा	भे, भो, जा, जी
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
खी, खू, खे, खो	गा, गी, गू, गे	गो, सा, सी, सू
पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती
से, सो, दा, दी	दू, थ, झ, ण	दे, दो, चा, ची

नक्षत्र परिचय तालिका

संस्कृत नाम	वैदिक नाम	पाश्चात्य नाम	गण	वृक्ष	अन्धादि संज्ञा
अश्विनी	आश्वयुज	Arietes	देव	केला	मन्द
भरणी	अपभरणी	Musca	मनुष्य	आंवला	मध्य
कृत्तिका	कृत्तिका	Alcyone	राक्षस	गूलर	सुलोचन
रोहिणी	रोहिणी	Aldebaran	मनुष्य	जामुन	अन्ध
मृगशिरा	मृगशीर्ष	Orionis - I	देव	खैर	मन्द
आर्द्रा	आर्द्रा	Orionis – II	मनुष्य	बहेड़ा	मध्य
पुनर्वसु	पुनर्वसु	Geminorun	देव	बांस	सुलोचन
पुष्य	तिष्य	Cancri	देव	पीपल	अन्ध
अश्लेषा	आश्लेषा	Hydrae	राक्षस	नागकेसर	मन्द
मघा	मघा	Regulas	राक्षस	बरगद	मध्य
पू. फा.	फाल्गुनी	Leonis	मनुष्य	पलाश	सुलोचन
उ. फा.	फाल्गुनी	Denebola	मनुष्य	पाकड़	अन्ध
हस्त	हस्त	Corvi	देव	नीम	मन्द
चित्रा	चित्रा	Spica	राक्षस	बेल	मध्य
स्वाती	स्वाती	Arcturus	देव	अर्जुन	सुलोचन
विशाखा	विशाखा	Librae	राक्षस	गोखरू	अन्ध
अनुराधा	अनुराधा	Scorpii	देव	जूही	मन्द
ज्येष्ठा	ज्येष्ठा	Antaris	राक्षस	रीठा	मध्य
मूल	विच्तौ	Scorpionis	राक्षस	साल	सुलोचन
पू. षा.	आषाढा	Sagittarii	मनुष्य	जामुन	अन्ध
उ. षा.	आषाढा	Sagittarii	मनुष्य	कटहल	मन्द
श्रवण	श्रोणा	Aquilae	देव	अकवन	सुलोचन
धनिष्ठा	श्रविष्ठा	Delphini	राक्षस	जूट	अन्ध
शतभिषा	शतभिषक्	Aquarii	राक्षस	कदम्ब	मन्द
पू. भा.	प्रोष्ठपद	Pegasi – I	मनुष्य	आम	मध्य
उ. भा.	प्रोष्ठपद	Pegasi – II	मनुष्य	मण्डूकपर्णी	सुलोचन
रेवती	रेवती	Piscium	देव	महुआ	अन्ध

अन्ध नक्षत्रों में खोई हुई वस्तु की प्राप्ति पूर्वदिशा से होती है, शीघ्र लाभ होता है |

मन्द नक्षत्रों में खोई हुई वस्तु की दिशा दक्षिण एवं फल यत्नलाभ बतलाना चाहिए |

मध्य नक्षत्रों में खोई हुई वस्तु की सूचना तो मिल जाती है किन्तु प्राप्ति नहीं होती है | वस्तु की दिशा पश्चिम बतलानी चाहिए |

सुलोचन नक्षत्रों में वस्तु की दिशा उत्तर होती है तथा वस्तु की प्राप्ति या सूचना नहीं मिलती है |

नक्षत्र निरयण भोगांश एवं शर, राशि-विस्तार, स्वरूप एवं तारासंख्या

नक्षत्र	अंशादि भोग	शर	राशि विस्तार	तारा	स्वरूप
अश्विनी	09°55'40"	08°29' N	0/13°/20'	3	अश्वमुख
भरणी	24°08'40"	10°27' N	0/26°/40'	3	योनि
कृत्तिका	35°55'57"	04°23' N	1/10°/00'	6	छुरी
रोहिणी	45°43'46"	05°28' S	1/23°/20'	5	बैलगाड़ी
मृगशिरा	59°38'49"	13°22' S	2/06°/40'	3	मृग का सिर
आर्द्रा	64°41'41"	16°02' S	2/20°/00'	1	मणि
पुनर्वसु	89°09'20"	06°41' N	3/03°/20'	4	द्वार
पुष्य	104°39'43"	0°5' N	3/16°/40'	3	तीर
अश्लेषा	108°27'04"	16°06' S	4/00°/00'	5	चक्र
मघा	125°45'09"	0°28' N	4/13°20'	5	गृह
पू. फा.	137°15'25"	14°20' N	4/26°/40'	2	खटिया
उ. फा.	147°33'17"	12°56' N	5/10°/00'	2	पलंग
हस्त	169°23'29"	11°12' S	5/23°/20'	5	हाथ का पंजा
चित्रा	179°46'53"	02°03' S	6/06°/40'	1	मोती
स्वाती	180°10'28"	30°44' N	6/20°/00'	1	अण्डाकार
विशाखा	201°01'22"	0°20' N	7/03°/20'	4	तोरण
अनुराधा	210°30'40"	01°59' S	7/16°/40'	4	जलधारा
ज्येष्ठा	225°42'08"	04°34' S	8/00°/00'	3	कुण्डल
मूल	240°31'26"	13°47' S	8/13°/20'	11	पूँछ
पू. षा.	250°31'16"	06°28' S	8/26°/40'	2	हाथी दांत
उ. षा.	258°19'31"	11°03' S	9/10°/00'	2	खटिया
अभिजित्	261°26'30"	61°44' N	-	-	-
श्रवण	277°42'58"	29°18' N	9/23°/20'	3	गरुड
धनिष्ठा	292°16'40"	31°55' N	10/06°/40'	4	मृदंग
शतभिषा	317°30'58"	0°23' S	10/20°/00'	100	मंडलाकार
पू. भा.	329°25'30"	19°24' N	11/03°/20'	2	जुड़वां बच्चे
उ. भा.	345°16'12"	12°36' N	11/16°/40'	2	दो मस्तक
रेवती	350°10'23"	0°13' S	00/00°/00'	32	मृदंग

--*